Chapter-7

सातवां अध्याय - भाषा-शैली

शिल्प

शिल्प विधि रचना पद्धति के लिये अंग्रेजी में टेकनीक शब्द का व्यवहार होता है । शिल्प अथवा रचना का सम्बन्ध उस परिणति से है जो कृति को सभी रचना विधान तत्वों के सहयोग से कृतिकार की प्रतिभा द्वारा प्राप्त होती है । यह रचना की वह पद्धति है । जिसके अन्तर्गत उप0 के सभी तत्वों को उचित क्रम से बैठाया जाता है । जिस उप0 की सेंटिंग जितनी ही अच्छी होगी, उसमें प्रभाव उत्पन्न करने तथा शिल्पगत सौंदर्य का आदर्श प्रस्तुत करने की उतनी ही अधिक क्षमता होगी । भाषा-संवाद योजना, घटनाओं का समावेश, दृश्य-योजना तथा कथानक का विस्तार आदि अच्छी सेंटिंग के माध्यम से ही उप0 का प्रभावकारी अंग बन पाता है । शिल्प उप0 को सौंदर्य प्रदान करता है । अत: उसे कला की श्रेणी में स्थान मिलना ही चाहिये । 1

शिल्प ही वह माध्यम है जिससे उपन्यासकार अपने विषय का अनुसंधान और विकास व अर्थ बोध करता है और अन्ततोगत्वा उसका मुल्यांकन करता है । शिल्प अथवा रचना कौशल के माध्यम से ही वह अपने अनुभव जो कि उप0 का वर्ण्य विषय है और जिसे वह अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिये विवश है, प्रस्तुत कर पाता है। 2

जैसे कर्ण के साथ कर्ण-कुंडल होते है उसी प्रकार हर रचनाकार के अनुरूप उसकी शैली होती है ।

शैलीकार का प्रधान कर्तव्य स्वंय की अभिव्यक्ति नहीं है वरन् अपने से प्रभावित करना है । लेखक को स्वत: अपने को प्रथमत: श्रोता अथवा पाठक के स्थान पर रखकर उसकी सुविधा तथा उसके आराम की चिन्ता करनी चाहिये । 3

इस स्थिति का विचार किये बिना श्रोता अथवा पाठक उस रचना से आनन्द नहीं ले सकते । अत: शैली को पाठक के अनुसार संजोना आवश्यक है ।

परिभाषा -: 1) शैली विचारों का परिधान है । 4

2) शैली व्यक्तित्व की सूची है । 5

3) शैली व्यक्ति का परिधान नहीं, उसका चमड़ा है । 6

शैली लेखक के मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब होना चाहिये किन्तु चयन तथा भाषा का आधिपत्य अभ्यास जन्य हुआ करता है । शैली आदि से अंत तक वर्तमान रहती है । वाक्यों के चयन, पात्रों के कार्यों, प्रत्येक वर्णन में इसे देखा जा सकता है । लेखक की कल्पनाएं, भावनाएं ही विविध शैलियों में व्यक्त हुआ करती है । शैली विविधता लेखक व्यक्ति के अनुरूप हुआ करती है । 7

भाषा के समान शैली में स्पष्टता, सरलता, सजीवता, रोचकता, स्वाभिकता आदि गुण अपेक्षित है । इसके अतिरिक्त यथावसर माधुर्य, ओज, गांभीर्य आदि का प्रवाह पूर्ण तथा प्रभाव युक्त उपयोग रचनाकार की विशिष्ट शैली को गरिमा प्रदान करता है । वाक्य रचना में सुसंगठन, धारा-प्रवाहिकता, रोचकता एवं व्यंजकता अनिवार्य है । इसके अभाव में भाषा-शैली का प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है और सुन्दर से सुन्दर कथा का प्रभाव विनष्ट हो सकता है ।

"घी का लड्डू टेढ़ा भी भला, कहावत अपनी जगह पर ठीक है, पर घी का लड्डू सुडौल भी हो तो उसका आकर्षण निश्चय ही अधिक होता है । शैली स्वंय व्यक्ति है अर्थात व्यक्ति का/रचनाकार का व्यक्तित्व शैली में व्यक्त होता है ।

भाषा

मनुष्य एक समाजिक प्राणी होने के नाते वह अपने विचारों और भावों को प्रस्तुत करने के लिये जो अभिव्यक्ति की रचना करता है । उसे भाषा कहते है । भाषा का भी अपना एक अलग अस्तित्व होता है । इसी के द्वारा साहित्यकार अपनी कृति पर व्यक्तित्व की छाप डालता है । अपने व्यक्तित्व की रक्षा के लिये अपनी रचना में लेखक शैली की ही सहायता लेता है । वह अपने ही ढंग, अनुभव, विचार, कल्पना, संस्कार, शिक्षानुसार अपनी रचना में किसी भी वस्तु का चित्रण करता है । इन सबके कारण उसकी भाषा तर्क शीलता तथा अभिव्यक्ति में जो मौलिकता, अपनत्व तथा नवीनता रहती है । वाक्य गठे हुए सरल, रोचक एवं श्रृंखलाबद्ध होने चाहिये, उसमें गति होना अनिवार्य है । परन्तु यह तभी संभव होगा जब शब्द संतुलित, चुस्त, भावानुकुल तथा आवश्यक होगे ।

भाषा पर मिश्र जी का अद्भुत प्रभुत्व है । मिश्र जी की कहानियां अपनी भाषा की सहजता एवं जनोन्मुखता के कारण सभी प्रकार के वाचकों को मुग्ध कर लेती है । भाषा के प्रयोग में कृत्रिमता से दूर रहने के कायल है । अभिव्यक्ति में जो कलाकार जितना सहज होता है । वह उतना ही अधिक जनता के निकट होता है परिणाम स्वरूप उनकी कहानियों में सहज, स्वछंद एवं प्रवाहमय भाषा बराबर मिलती है, चूंकि मिश्र जी गांव से अधिक निकट रहे है अतः उनके प्रयोग में उस परिवेश का भी ज्यादा असर रहा है । उन्होने अपनी भाषा में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करने पर बल दिया है वरन् उनका प्रयोग भी किया है । विविध भाषाओं के शब्दों से लेकर लोकभाषा का पूर्णतः प्रयोग भी अपनी भाषा में करते है ।

उपन्यास और कहानियों की भाषा में अंतर :

कहानी व उप० कथा साहित्य की दो विशिष्ट शैलियां है । वस्तुतः जहां उनके मूल तत्वों में समानता हैं । वहां दोनों की शिल्प विधि व रूप विधान में अपार भिन्नता है । लम्बाई के कारण ही उप० में इतना फैलाव होता है कि जिसके भीतर उपन्यासकार मानव जीवन अथवा घटनाओं का विकास रेखाओं को स्पष्ट करने का अवसर पाता हे और किसी भी विषय के विस्तार में जाकर उसे गहराई में उतारने की सुविधा मिल जाती है । छोटी कहानी आकार में छोटी होती है । जिससे कहानीकार के सीमा के भीतर ही अभीष्ट कथन की समग्रता और उसकी अत्यन्ता का-बोध करना होता है । उसे क्षण गत अनुभूति की तीव्रता, दुर्बल क्षणिक अन्तेविग और टुटने वाले क्षणों को एकत्र करना पड़ता है । जिसके अनुसार भाषा भी बदलती जाती है ।

कहानियों में लेखक उन घटनाओं की सुची बना लेता है । जिसका प्रयोग आवश्यक होता है उसी के अनुरूप वस्तु विन्यास या शिल्प की भाषा का प्रयोग करता है । कहानी के वस्तु विंयास में तथा प्रायः हर हाव-भाव में नाटकीयता शोभा देती है । यही नाटकीयता उसके औत्सुक्यवर्धक प्रारम्भ, कलात्मक संवाद और अनुभुतियों में अधिक सहायक सिद्ध होती है ।

नगर में नागरीक व ग्राम में ग्रामीण भाषा का प्रयोग -:

मिश्र जी ने चूंकि ग्रामीण क्षेत्र पर ज्यादा लिखा है । लेकिन फिर भी उन्होने

नागरीय जीवन पर भी लिखा है । उसके अनुसार उनकी भाषा भी परिवर्तित हुई है । उन्होने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन पर लिखी हुई कहानी में गांव की ही यथार्थ भाषा [लोक भाषा] का प्रयोग किया है तथा शहर में शहरीय भाषा का प्रयोग किया है ।

गांव की भाषा का उदाहरण -:

उदा0- उसने देव को देखते ही चिरौरी की "बाबू जी- जरा मनिआडर फारम भरि दहिल जा।" "हां बाबू जी, लिखि दीहल जा कि भाई रे चालिस रूपया भेजत बाटीं । बीस रूपया करज चुका दीहे, बीस में काम चलइहे । हां भाई, बहिनिनि के कवनों तकलीफ न होखे पावे । हमरे जियत भर तुहंन लोगन के तकलीफ नाहीं होखे पाई ।"

फार्म भरकर पूछा - " क्यों रे, अपनी बीबी, बच्चों को कुछ नहीं लिखायेगा।" वह लजा गया -" जाये देईं बाबू जी, मेहरी-लइका क ख्याल करे खातिर-भाई बटली वा । 8

इसके साथ ही मिश्र जी ने नागरिक भाषा में नगर के जीवन पर भी कहानियां लिखी है ।

उदा0- मनोज तो उसका अपना ही था फिर अपना होकर भी कहां अपना रहा । यह पुरूष का कानुन है, यह स्वतंत्र देश का कानुन है कि बच्चा पैदा करे मां और अधिकारी हो जाये बाप । संवेदनाओं का मूल्य त्याग में है । मां अपनी सारी संवेदनाएं दूह-दूह कर अपने पुत्र का निर्माण करती है । अपने पास वह क्या रखती है । लेकिन नहीं पुत्र न्याय के समय पिता का हो जाता है । न्याय और संवेदना मानों अलग अलग चीजे हो । 9.

पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग -:

मिश्र जी ने अपनी कहानी के पात्रों की भाषा का चयन भी उसी प्रकार से किया है । जिस प्रकार के पात्र है । अगर ग्रामीण पात्र है तो उसकी भाषा ठेठ

लोक भाषा में प्रयुक्त है । यदि नगर में पढ़े-लिखे व्यक्तियों का उल्लेख है तो उसकी भाषा का स्तर भी उसी प्रकार है । पात्रों के अनुरूप उन्होंने अंग्रेजी, गुजराती, मुसलमानों की भाषा का प्रयोग किया है ।

1) अंग्रेजी - उदा0-

उसका एंट्वास भी पे कर दिया था, लेकिन वे आये नहीं, आपको वह मकान मिल सकता है ।

"थैंक्यू डॉक्टर त्रिवेदी, आपने मेरा भार हल्का कर दिया । अब मैं अपनी फेमिली ला सकता हूं न ? "

-श्योर-श्योर, डॉ. तिवारी फिर हंसे "ओ0 के0 प्रो0 पंकज, टैक रेस्ट ? प्रिंसीपल चले गये ।

" हलो प्रोफेसर, हाउ डू यू फील नाउ" सामने मिस्टर महेता खड़े थे ।

" फाइन, डॉक्टर महेता । पंकज उन्हें डॉक्टर कहकर मुस्करा पड़ा ।

" चाय-बाय मिल सकती है क्या ?

" श्यारे-श्योर, हम अभी बोलता है कैण्टीन वाले से ।" 10

2) गुजराती भाषा -:

पटेलानी ने हंसकर कहा-" मास्टर तुम्हारा बेबी तो बहोत अच्छा है।" मुन्नी बड़ा पाजी हो गया है ।

"बाई, कोई वादा नहीं, हम दवा ला देगा । जो चीज की तुम्हेरे को जरूरत हो, मेरे को बोलना । 11

3) मुसलमान पात्रों की भाषा -:

"आदाबअर्ज है महमूद चाचा, आदाबअर्ज है चाची जान । वह थोड़ा ठिठक गया । फिर बोला-" महफिल चल रही है , अरे, यह कूजा कौन है, कहां से पकड़ लाए ?"

"कूजा ? तुम कूजा किसे कह रहे हो । "अरे वह क्या है जिसे घेरकर तुम लोग बैठे हुए हो ?

"अमां कासिम मियां, कुछ तो लिहाज किया करों महेमानों का ? ये हमारे अजीज, महेमान है । तुम इतनी नहीं, हमारी, हम तबकी तोंहीन कर रहे हो।"

"महेमान, अब हिन्दू तुम्हारे महेमान होने लगे है । करों मियां करों महेमाननवाजी । जब महेमान घर में घुसकर मारेगें, तब मालुम होगा ।" 12

4) बंगला भाषा -:

बंगाली कलक्टर बिगड़कर बोला, कौन है यह महीपसिंह, हम ऐसे ऐसे गुंडे को रगड़ कर रख देगा । शाला लोग देश को तबाह कर रखा है । संसार भर का गुंडा लोग कांग्रेस में चला आ रहा है । और बरबाद हो जाने पर भी साहब बना हुआ है । हम देश के ऐसे-ऐसे दुश्मनों का नाश करके रहेगा । 13

5) गोरखपुरी भाषा -:

"बाबू कहां चले के होई । "

"कहां चले के होई मालिक ।"

"अरे सरकार हम चलत हुई, कहां जयेके होई ?"

प्रमोद चौंककर रिक्शे वालों को देखने लगा । "कहां चली मालिक ? रिक्शे वाला पूछ रहा

"बेतियाहाता ।"

"बारह आना होई मालिक ।"

"अरे चलो जो होगा ले लेना।" 14

6) ठेठ लोक-भाषा -:

जे बा से चुप रह दलिद्दर टीतुन । तें का बतियइबे । आ ए बेनी तू का बतियइब । तू कवन दुनिया देखले बाट । जइसन तोहारी पूडी कहमरे. जगरनिया के बियाहे में बनल रहे ओइसन बिशुनपुर के बाबू और चिउंरहा के मुंसी गनेश प्रसाद के इहां को मुअस्सर होई । हमरे घर के बतिये और है जे बा से हूं - 15

इस प्रकार मिश्र जी ने अपने उप0 व कहानियों में पात्रों के अनुसार उनकी भाषा का प्रयोग किया है । उसमें स्वाभाविकता वास्तविक सौंदर्य की झलक दिखायी देती है । जिस क्षेत्र का पात्र लिया है । उनके द्वारा उन्हीं की बोली का प्रयोग करने में खूबी दिखायी है ।

चूंकि मिश्र जी ने पात्रों के अनुसार उनकी बोली का प्रयोग किया है । अतः उन्होंने उनकी गालियों का प्रयोग भी सामान्य बोलचाल की भाषा के साथ किया है । गालियों का प्रयोग करना उनकी खास विशेषता नहीं है । वरन् यह पात्रों के अनुकूल ग्रामीण वातावरण को दर्शाता है । इस दृष्टि से देखने पर मिश्र जी अति यथार्थवाद के नाम पर गन्दी-गालीच भाषा का व्यवहार करने वाले लेखकों की मनः स्थिति से सर्वथा भिन्न दिखायी पड़ते है ।

गालियों का प्रयोग :-

1) "मास्टर आ रहा है, रे मुंडुवा" । "मास्टर ले जाओ मुन्नी को । यह कहीं छू - छा देगा इसे तो, इसका खून पी जाउंगी ।" "क्या बकती है रे कुतिया । मैं इस छोकरी को छुउंगा ?" देखोन मास्टर यह हमें पागल कुता समझती है ।
"देखो न मास्टर इस दहिजरे को । मुझे मारता है । लोग क्या क्या कहता है हमारे बारे में । तिस पर यह हरामखोर मेरे को मारता है ।" 16
इसमें पति-पत्नी द्वारा गालियों का प्रयोग हुआ है, निम्न वर्ग के स्त्री पुरूष दोनों ही सामान्य रूप से एक दूसरे को गालियां देते है ।

2) "क्या कहा हरामजादे तूने ।"
"देखिये मां जी, गाली मत दीजिये ।"
"मां ? मैं तेरी मां लग रही हूं ? "

लोगों ने पचास साल की उस मोटी औरत की ओर उझक-उझक कर देखा और मुस्कराने लगे ।

"गलती हो गयी, आपको मां जी कहा । दरअसल आप मेरी बेटी लग रही है ।" "बेटी ? मैं तेरी बेटी हूं, कमीने । एक तो धक्का मारता है दूसरे बेटी बना रहा है ।"

"ओहो, तो मैं आपको क्या कहूं ।" "आपको औरत से बात करने की तमीज नहीं है ?" एक दूसरे सज्जन ने बीच में टांग अड़ाई ।

"अच्छा तो आप मसीहा बनकर आये है । बनकर आये है तोपहले इन्हें समझाइये कि औरत की तरह बोलना सीखे ।" "अरे यह हरामजादा जब से खड़ा है तब से मेरे ऊपर गिरा आ रहा है ।" 17

यहां पर फूहड़ स्त्री द्वारा इन शब्दों का प्रयोग है तथा जो हास्य की ओर ले जाता है । इसमें व्यंग्य भी निहित है ।

3) रामभइया देर तक गाली देतेरहे - "सुअर का बच्चा, कमीने की औलाद, बहुत विद्वान और आदर्शवादी बनता है । सिर चढ़ाने वाले चले गये, अब तो बच्चू को मांगे भीख भी नहीं मिलेगी । इस कमीने के कारण हम लोगों का भी निरादर होता रहा, सारी पूजा इसी को चढ़ती रही । बाप ने तो हमें चोर, बेईमान, और आवारा समझा ही, यह भी समझ रहा है। अब दो दिन में अक्ल ठीक हो जायेगी ।" 18

बड़ा भाई अपने छोटे भाई को दुष्कारते हुए यह बोलता है । अनपढ़ होने के कारण वह अपने बड़प्पन को प्रदर्शित करता है ।

4) क्यों रे कल्ली, ठीक ठीक बता, बात का है ? अरे हरामजादी जो हो गया है, सो हो गया है, अब इसे छिपाने की जगह जल्दी इसका कोई इन्तजाम करना होगा न जिससे बदनामी से बच जाये ।"

"किसका है रे चोट्टिन" दादी पूछ रही थी, "दादी जरा धीरज से काम लो, उसे अब गाली-बोली देने से क्या फायदा । हां बच्ची, बता किसका है ?"

कलावती पहले तो बहुत नाहीं नू ही करती रही फिर उसने झिझकते हुए कहा धर्मेन्द्र भइया का"।

"क्या ? जैराम चौंक उठे ।

"अरे, उस भटकीनवा का है । जिस पत्तरी में खाता है उसी में छेद करता है । अरे, मुझे तो वह फूटी आंख नहीं अच्छा लगता है लेकिन शिवलाल उसे कंधे पर बैठाये घूमते है । अब फल भोगें ।" दादी बड़बड़ा रही थी । 19

गांव की बड़ी-बूढ़ी औरतों का वार्तालाप ही इस प्रकार का होता है । गालियों का प्रयोग गांव में प्रमुखता से होता है ।

अंचल में लोगों की जबान पर चढ़ी अनेक गालियों का प्रयोग भी आंचलिकता का व्यंजक है । जैसे दाहिजरा, भटकीनवा, मेहरे मउगे, फलानचीनभारी, हिंजड़े, मरदमारी, छिनाल हराम खोर, सूअर-खोर आदि का प्रयोग मिलता है । इसमें अश्लीलता नहीं बल्कि परिवेश के यर्थाथ को व्यंजित करने की शक्ति है ।

अनुभव के अतिरंजित बौद्धिकीकरण और भाषा के प्रति गैर जिम्मेदार रवैये का दुष्परिणाम समकालीन लेखन में बहुत मुखर तौर पर लक्षित किया जा सकता है । लेकिन मिश्र जी की कहानियां में भाषा का रचाव पर्याप्त संयमित और यर्थाथ से मुठभेड़ की विचारोत्तेजक सम्भावनाओं से युक्त है । इनकी बहुत सी कहानियां और उपन्यास अंचल विशेष पर आधरित है । लेकिन भाषा में "स्थानीय रंग" को लेकर उनमें पर्याप्त सावधानी बरती गयी है । स्वयं मिश्र जी के विचार में- "सवाल यह है कि रचना का संदर्भ किस प्रकार से शब्दों की मांग करता है । रचना ऐसे शब्दों को पाकर धन्य होती है या नंगी होती है और अपना अर्थ खोली है ।" मिश्र जी की कोशिश रही है कि भाषा को नग्नता से बचाया जाये ।

मिश्र जी की कहानियां व उपन्यासों के ऐसे अनेक रूप मिलते है । जिसमें उनमें विवरणात्मक, काव्यात्मक, चित्रात्मक, प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक, भाषारूपों का वर्णन मिलता है जिसका प्रयोग क्रमशः प्रस्तुत किया गया है ।

<u>विवरणात्मक वर्णन</u> -:

चलते चलते वह बायीं ओर के मकान के सामने रुकी, जेब से सिगरेट और दियासलाई निकाली और सिगरेट जलाकर मुंह से लगा दिया । दूर उसका बाप खड़ा था, उसने गुस्से से मुंह फेर लिया । वह अब सिगरेट पीती नहीं थी, केवल बाप के लिये दो-एक सिगरेट जेब में रखती थी । बाप हरामजादा, वह मुस्करायी,

आगे चल दी, खिड़की में से झांकती हुई मां की आंखे दिखाई दी, वह एक पल रुकी, हाथ जोड़े और आगे बढ़ गयी । 20

इस कहानी के आरम्भ में ही छोटे छोटे वाक्यों द्वारा विवरण दिया गया है । तथा साथ ही साथ अनेक क्रिया - व्यापारों का प्रयोग किया गया है । इन पंक्तियों में लड़की का व्यवहार अपने पिता के प्रति क्षोभ व्यक्त करता है । इसके अतिरिक्त अनेक कहानियों व उपन्यासों में विवरणात्मक रूप मिलता है ।

प्रकृति का अलंकृत वर्णन -:

झूमते हुए गेहूं - जौ के सुनहले खेत, पगडंडियों को बुहारती बहती अल्हड़ फागुनी हवा, मंजरियों से लदे आम के बगीचे, ताल-तलैयों के पानी में थिरकती हरीतिमा की एक नयी गहराई, दिगंतों तक फैले रंगो के रहस्यमय लोक में खोई दृष्टि, पत्तों को झाड़ कर डाल-डाल की पोर-पोर से आग से फूल दहकाते पलाश, नदी के तट से टकरा-टकराकर गूंजता लहरों का गीत और दूर किसी वृक्ष से उड़कर आता हुआ कोयल का स्वर । 21

यहां पर प्रकृति का उन्मुक्त रूप से वर्णन किया गया है । काव्यात्मक सौंदर्य को भी प्रकट किया गया है । जो यथार्थ रूप से मिलता है ।

वातावरण (परिवेश) वर्णन -:

नदी-नालों की उफनती धाराएं पर साल हरियाली को चौपट कर देती है- उसकी आंखों के आगे दूर दूर तक उफनते हुए नालों का सफेद जल दिखाईपड़ रहा था । बाढ़ की छाती पर लोटती हुई सड़के, सुख समृद्धि- फूलती हरियालियां और ---- बाढ़ की प्रलयकारी धाराओं के कारण तिवारीपुर, भाटपुर, सिंहपुर, पसिमाना आदि अनेक गांवों को समेटने वाले ज्वार अंचल की विशिष्ट जीवनशैली बन गई है । सामने फैले हुए नंगे खेत, बाढ़ की बरबादी की मौन कथा कह रहे थे । हां, नंगी धरती, धरती का जड़ सन्नाटा, सन्नाटे के भीतर सोया संघर्ष, टूटने बिखरने का भयानक शोर, जड़ सन्नाटे को चीरते हुए ये हल-बैल, जड़ता की छाती में बिखरते हुए बीज, लहलहाते अंकुर, झूमती फसलें और फसलों के कट जाने के बाद का सन्नाटा । भीषण प्रकृति के खिलाफ संघर्ष ही जीवन की आस्था बन

गयी है । लेकिन इस आस्था में कछार के लोगो की भूख, अभाव, बीमारी, और अनहोनी मृत्यु का दर्द रचा बसा है । 22

यहां पर आंचलिक उप0 का परिवेश को चित्रित किया गया है । वातावरण के आधार पर उस गांव की परिवेश की वास्तविकता को बताया गया है । यह लोगो के दुख, दर्द, गरीबी, बेबसी का प्रतीक भी है ।

क्रिया व्यापार वर्णन -:

खूले बदन पंडितजी बैठे थे । पहले तो खामोश रहे, फिर धीरे धीरे बोलने लगे । उनकी मुट्ठियां तन गयी, आँखे लाल हो गयी, दांत से ओंठ काटने लगे और चभुवा-चभुवा कर बोलने लगे । बोलते, फिर शांत हो जाते - जैसे अपने से लड़ रहे हो, फिर किचकिचा कर गाली उगलने लगते - न जाने किस-किसको ? 23

गुस्से में व्यक्ति की चेष्टाएं, उसके हाव-भाव का विश्लेषण, मुख-मुद्रा आदि को दर्शाया गया है । शब्द चित्र भी है ।

काव्यात्मकता भाषा -:

खो गया दूर उस हरीभरी वनस्त की तलहटी में जहां कमलों से भरी झील है । झील के चारों ओर हरेभरे नारियल के पेड़ बिखरे हुए है । नील रोमिल विहंगों की पंक्तियों की तरह आपस में घंसे हुए धानों को गुदगुदाता पवन आर-पार सरसरा उठता है । पेड़ो के ऊपर झुके झुके बादाल फुहारे ढार रहे है । प्रवीन है और पदमा, पदमा है और प्रवीन । दोनों के साथ है झील की कांपती हुई लहरियां की तरह अनन्त्र सपने दूर दूर कहां संगीत बज रहा है । पद्मां ...छवि की एक लहर, खुशबु का एक साकार झोंका, मस्ती की एक घटा । लगता है नाम लेते ही हवा सुगन्ध से भर गयी है । आस-पास के आकाश में हजारों गुंल मुहर के फूल खिला खिला पड़े है । 24.

जहां इस प्रकार की भाषा का प्रयोग हो जिसे पढ़ते ही काव्य का रस सा आन्नद आने लगे तो उस कहानी को काव्यात्मक भाषा युक्त कहानी कहते है ।

...265...

चित्रात्मकता -:

1) सीलन भरी बरसातों में तालती आंखे, मिट्टी के खाली बरतनों में बार बार झांकती और उदास लौट आती आंखे, भरा भरा कर गिरती हुई दीवारों को देखती हुई आंखे, सपाट असीम सन्नाटे से लदी हुई अपमानित पीड़ित और टूटी आंखे। 25.

इसमें आंखों का विशेषण का प्रयोग किया है।

2) इनकिसानों के घर पर दर्द से टूटती हुई एक अर्द्धनग्न नारी है, जवानी के भार से माती और अभावों के श्रृंगार से बोझिल एक बेटी है, टूटी मड़ैया के नीचे बड़े पेट वाला एक लड़का छटपटा कर रो रहा है। 26.

इन उद्धरणों में गद्य लय भीतर के सूनेपन, भीतर से उपजते संवेदना, टूटते हुए निरीह अहसास, दर्द से भरी हुई अनुभूतियों को व्यक्त करता है बल्कि उसे महसूस भी कराता है। इन मानवी मुद्राओं के भीतर की सच्चाइयों को बड़ी गहराई से उठाया गया है।

3) सनसना कर हवा लहर गयी और आसमान धरती की जलती छाती पर अपने को निछावर करने लगा। झर-झर-झर फुहारों ने क्षण मात्र में जमीन को भिगों दिया। बादलों की ठंडी ठंडी तरल परछाइयां किसानों की आंखों में तैरने लगी। पशु-पक्षी आनन्द से कूकने कूकने लगे। पानी के स्पर्श से उमस से व्याकुल प्राणियों के रोएं खिल गये। झर-झर झर-झर फुहारों ने आसमान को कुहरे के समान ढंक दिया। धरती से सोंधो-सोंधी सुगन्ध फैलने लगी। पानी बरसता रहा। पानी की मोटी मोटी धाराएं, गलियों और नालियों से हरहराती हुई गड्ढों और पोखरों की ओर दौड़ने लगी और देखते देखते ही ताल भर गये। 27

जिस चित्र का वर्णन करने से आंखो के आगे वह दृश्य साकार हो उठे। और मन रोमांचित हो उठे। उसको चित्रात्मकता भाषा करते है। यहां पर गांव में बरसात के आने पर लोगों के इंतजार करने के बाद किस प्रकार से पुलकित हो उठते है। उसका वर्णन मिलता है।

अभिव्यक्ति के दौरान रचनाकार यह निश्चित कर लेता है कि वह अपना मूल संवेदन, बिंब कहानी के माध्यम से अधिक अनुकूलता के साथ मूर्तित कर सकता है। इसके लिये विभिन्न शिल्पों, अभिव्यक्ति, कोशलों, प्रतीको आदि का प्रयोग करते है। प्रतीकों में गहन अभिव्यंजना है।

प्रतीकात्मकता -:

1) पिंजड़े में एक तोता बार बार पंख फड़-फड़ा रहा था और निकलने का रास्ता न पाकर टें-टें चिल्ला उठता था । पवन उसे एकटक निहार रहा था । कितना बड़ा आकाश और कितना छोटा पिंजड़ा। उसे लगा कि उस पिंजड़े में वह स्वंय ही है । फर्क इतना ही है कि तोतो टें-टें चिल्ला रहा है और वह चुप है ,— नहीं उसके भीतर भी एक टें-टें की आवाज है जिसे वह निरंतर अकेलें में सुनता रहता है और यह कितनी बड़ी यातना है कि अपनी टें-टें की आवाज को केवल वही सुनता रहे । 28

इस कहानी के आरम्भ में पिंजड़े की सीमा में पंख फड़फड़ाता तोता है तो अन्त में गाड़ी की सीटी सुनकर अगली छुट्टियों में कहीं भी जाने की उड़ान की घुटी घुटी कामना का साक्षात्कार है । लेखक स्वंय को तोते के समान पिंजड़े में कैद मानता है । स्वंछद वातावरण का प्रतीक है ।

2) भाटपार के बाजार में पान की दुकान पर खड़े दीनदयाल पान चुभला रहे है । नौकर गोश्त खरीद रहा है । कसाई के हाथों में बकरा छटपटा रहा है और बहे हुए रक्त पर दो कुते एक दूसरे से लड़ रहे है । दीनदयाल इस बात को रस से देखता है । सोचने पर उसके मस्तिस्क में अनेकों बकरों का चित्र उभरता है । और कसाई की छुरी हाथ में लिये उन्हें काटने की कल्पना शोषक के क्रूरतम आन्नद का प्रतीक है। दीनदयाल शक्ति सम्पन्न पूंजीपति है । जो गांव की निरीह जनता को कसाई की निर्ममता और तटस्थ आन्नद के साथ जिबह करता रहता है । अन्य लोग उसके हिंस्र स्वार्थ के सम्मुख बलि के बकरे है ।

3) गाड़ी भागी जा रही है, स्टेशन निर्लिप्त भाव से छूट रहे है - एक, दो, तीन, चार, पांच और समय की गाड़ी मेरे जीवन के दिनों महीनों को असंपृक्त भाव से छोड़ती भागती रही । पल, घड़ी, दिन, महीने, और मैं मशीन की तरह एकरस जिंदगी ढोती आंगन से कमरे और कमरे से आंगन में सटकती रही ।

यहां पर गाड़ी का प्रतीक जीवन की गाड़ी से है । ऋतु का जीवन भी उसी तरह नीरस हो गया था । जिस प्रकार गाड़ी स्टेशनों को छोड़ कर आगे बढ़ती जाती है । उसी प्रकार ऋतु भी अपने जीवन के कीमती सालों को नीरस होकर

ढोती जा रही है । उसने अपना जीवन मशीन का प्रतीक बना कर किया । जिसका कार्य चलते रहना है ।

बिम्बात्मक वर्णन -:

॰ जहां ऐसी भाषा कि आंखों के आगे प्रस्तुत प्रसंग का बिम्ब सा उभर आये, उसे बिम्बात्मक भाषा कहते है । मिश्र जी ने अपनी कहानियों व उपन्यासों में इसका बहुत प्रयोग किया है ।

1) जगह-जगह सुधर सन्तुलित उठाव, गिराव और कटाव से मण्डित उसका भरा हुआ शरीर कुशलतम शिल्पी की छैनी से तराशी हुई मूर्ति सा उभर रहा था । 30.

2) काले अनगढ़ गोल पत्थर सी मोटी-चोड़ी अधेड़ सी फूहड़ औरत जिसके कानों को बुरी तरह फाड़-फाड़ कर चांदी गिलट के गहने आकाश बेलि की तरह लटके हुए थे । 31

प्रस्तुत प्रसंगों को पढ़ने से सौंदर्य का मानसिक छाप छोड़ती है । लेखक ने किस-किस प्रकार से शब्दों के माध्यम से उसका रूप को प्रस्तुत किया है । यहां अलंकृत बिम्ब का वर्णन है ।

3) नदी के किनारे बैठकर पुवा हवा में एक पर एक गिरती पड़ती भागती हुई फेनिल लहरों को दखना । कट-कट कर गिरते हुए अरार-धड़ाम, धड़ाम-धाराओं का बज-बजाता हुआ शोर, धाराओ में पड़ी हुई चीजों का बेतहाशा भागना, कभी-कभी किसी बड़ी सी डाल का ऊपर उठना-गिरना, किसी नाव का डगमगाते हुए धाराओं से संघर्ष करना, तट की डालों का झुककर पानी में भीगते रहना, ऊपर-ऊपर काले-काले बादलों का लहरा पर लहरा-दूर दूर तक धान के खेतों का कांपना - और और हां, कुछ और भी -- शायद गांव की कसमय युवतियों का घाट पर आना-नहाना और भीगे हुए वस्त्रों का तन से चिपकना- और और । 32

यहां पर प्राकृतिक चित्रण का सादृश्यात्मक वर्णन किया गया है । उसके क्रिया व्यापारों, घटनाओं का चित्रण किया गया है । जो वातावरण को सूचित करता है । इसमें गतिशील बिम्ब को प्रस्तुत किया गया है ।

4) सुना घर -- क्या पता था कि इतना भरा हुआ घर दो दिनों में सुनसान हो जायेगा। इस सुनसान में तड़पते दो निरीह बालक और चारों ओर आह=कराह, हवा की सनसनाहट, वर्षा की सीलन, मौत की चीत्कारों से भरा गरजता हुआ प्लेग। 33.

गांव में प्लेग फैलने से जो वहां की स्थिति होती है। उसका यथार्थ संवेदनीय वर्णन किया है। जिसको पढ़ने से ही करुणापूर्ण दृश्य सामने उभर आता है। यहां पर मानवीय तीव्रता को अभिव्यक्ति किया गया है। यहां पर शोक बिम्ब निहित है।

मिश्र जी के उपन्यासों में शाब्दिक प्रयोग और बिम्बों की बहुत छायाओं से व्याप्त है। जिसमें विभिन्न ध्वनियों मिट्टी की सोंधी-गंध मूखेंकी प्राकृतिक बनावट, खेतों, खलिहानों की रंगत, मकान के भीतर से ले फूट-फूट कर स्मृतियों का कहना, नंगी धरती का किसानों द्वारा चीरा जाना, स्मृतियों के भीतर तरह-तरह के शोर का बज-बजाकर सो जाना, जमींदारों का टुटना और उजड़ना, चेहरों का अंधकार से फुटना, भूख का लोटना, मन के दर्द का तैरना एवं गीतों का चिरकटना आदि आदि असंख्य प्रयोग है। जो हमें प्रयोक्त की भाषा विषयक गतिशीलता का परिचय देते है। यहां पर क्रिया-व्यापार को सुचित करने वाला सटीक क्रिया पद का चुनाव किया गया है।

बिम्बात्मक की अनिवार्यता को लेखक ने स्वयं एक भेंट वार्ता की स्वीकार करते हुए कहा कि "इन बिम्बों को लांघकर, कथाकी स्थूल डोर पकड़कर भी चला जा सकता है किन्तु तब उप० की अनेक अंतर्कथाओं मानसिक यात्राओं की दुनिया के जटिल अनुभवों से कट-कट केवल बाहरी घटनाओं के सुखों और दुखों की प्रतिति पाई जा सकती है_ अत: बिम्ब विवेचन प्रक्रिया कृति के सफल मुल्यांकन में अत्यन्त आवश्यक है।" 34.

° "हां, टुट रहा है यहां का जल, टुट रहा है, धारा-धारा से बिछुड़ रही है। लहरें, लहरों से टुट रही है। बांध-बंध रहे है लेकिन पोखता नहीं, जो जल को संपल कर एक दिशा में प्रवाहित करे और उनमें से शक्ति उजागर करे, बांध जगह-जगह दरक रहे है और जल टूट रहा है, टुट रहा है।"

इसमें एक एक शब्द गंवई जीवन के विराट सत्य को उद्घाटित करता हुआ उसके संश्लिष्ट चित्र में रंग भरता है। जल प्रतीक है जीवन का पल का, बाढ़ के रूप में उफनना, धाराओं में अलग-अलग बहना, कभी दिशा बदलकर बहना, कभी चक्कर काटना तो कभी समानान्तर बहना जटिल जीवन के संकेत चित्र है।

श्रवण बिम्ब -:

धांय-धांय जलती दोपहरी, रह-रह कर उठते धूल के बगूले, धूप में तपती गिरी हुई दीवारें, यह खंडहर बनकर फैला हुआ स्कूल, अपने समूचे विस्तार के साथ मुझमें पैठ जाना चाहता था। एक अधगिरी दीवार की छांह में लेटा हुआ एक कुत्ता, खंडहर के एक कोने में कुछ घास-फूस का ढेर, जिसमें सरसराते हुए गिरगिट निकल जाते थे। एक कोयल बोली पेड़ पर से। न जाने मुझे क्यों लगा कि अभी कोई सांप कहीं से से निकलेगा और पूरे खंडहर पर एक लकीर बनाता फिर लौट आयेगा। 36.

यहां पर सुने में जीवजन्तु की चीत्कार की भीषणता को बताया गया है।

हास्य-व्यंग्यात्मक वर्णन -:

मिश्र जी ने हास्य-व्यंग्यात्मक भाषा का भी प्रयोग किया है। एक इंटरव्यू उर्फ कहानी तीन शुतुरमुर्गों की, कहानी में सरकारी व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है। यह कहानी बहुत ही रोचक व हास्यापद है।

"मगर इसका क्या प्रमाण कि आप हंस के बेटे हैं।" लोग हंसने लगे मगर हंस खीझ गया।" साहब, यह तो बड़ा बेतुका प्रश्न है। यह सवाल आपसे पूछा जाये या इन मनुष्यों से पूछा जाये तो वे या आप क्या प्रमाण देंगें अपने बाप की संतान होने का। शुतुरमुर्ग निरूद्वेग भाव से बोला- " आपको प्रश्न के बदले में प्रश्न करने का कोई अधिकार नहीं है, प्रमाण दे सकते है तो दीजिये, सरकारी काम बिना प्रमाण के नहीं होते।"

" मैं स्वंय प्रमाण हूं। हंस को पहचानने की शक्ति हो तो पहचानिये।" शुतुरमुर्ग ने काग महोदय की ओर मुखातिब होकर कहा"महोदय, नोट कीजिये, ये प्रमाण नहीं दे सकते।"

शुतुरमुर्ग ने फिर शीलभद्र से पूछा, "साहब आप प्रमाण दीजिये हंस होने का "शीलभद्र थोड़ा सा मुस्कराया और अपने थैले में से एक सरकार डॉक्टर का सर्टीफिकेट

पेश कर दिया । उसमें लिखा था - मैं प्रमाणित करता हूं कि शीलभद्र हंस का बेटा है । यह डिलीवरी मैंने ही करवायी थी ।" 37.

कहानी में ऐसे तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है जो हास्योत्पादन में तथा व्यंग्यात्मक का सृजन करने में सहायक होता है । यहां पर सरकारी कार्य व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है ।

हास्यपूर्ण भाषा -:

"खाना जुड़ता नहीं है और ये साले फैक्ट्री चालू रखते है और हर जगह अपनी कथरी-गुदड़ी बिछाकर जम जाते है । जैसे हर जगह इसके बाप की हो । ये हर तरह की गंदगी फैलाते रहते है ।"

"हां नेता जी, आप ठीक कह रहे है तभी तो पिछली सरकार नसबन्दी और शहर के सुन्दरीकरण का अभियान चला रही थी । एक आदमी ने व्यंग्य से मुस्कराकर कहा ।" देखिये, पिछली सरकार क्या कर रही थी, इसका नाम मत लीजीये, । वह सब कुछ एक भयानक नाटक था - एक राजकुमार को बादशाह बनाने का नाटक । अब परदा गिर चुका है, उस सरकार के जुल्मों, उसकी पैशाचिक भूख ।" 38

यहां पर भीख मांगने वाले गरीब लोगों को मध्य नजर रखते हुए सरकारी व्यवस्था तथा देश को सुन्दरी करण व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है । जो सुन्दर बनाने के लिये खर्चे की व्यवस्था तो करते है । लेकिन गरीबों को भोजन देने की व्यवस्था करने में सक्षम नहीं है । यह वाक्य हास्यव्यंग्य को प्रकट करता है ।

मिश्र जी की गांव की विभिन्न जाति व वर्ग की भाषा को ध्यान में रखते हुए उसको अलग-अलग श्रेणी में विभाजन किया गया है । जो इस प्रकार है ।

1) जमीदारों की भाषा	5) पति वर्ग की भाषा
2) हरिजनों की भाषा	6) स्त्री वर्ग की भाषा
3) पढ़े-लिखे वर्ग की भाषा	7) अनपढ़ स्त्री वर्ग की भाषा
4) अनपढ़ वर्ग की भाषा	8) पढ़ी-लिखी स्त्री की भाषा

1) जमींदारों की भाषा -:

"तब क्या इन्हें पानी पिलाया ."

"तूने पानी पिलाया । बाबु साहब अकड़ कर खड़े हो गये ।" किस चीज से पिलाया ।"

"और वहां और कोई चीज थी ही वहां संजोग से हमारे पास लोटा-डोरी था । संजोग से वहां कुआं भी था, बस पिला दिया हरामी तूने मेरे बेटे को अपने लोटे से पानी पिलाया ? नीच ।"

"मंगल कांपने लगा । हकलाता हुआ बोला । क्या करता बाबू साहब, पानी और कहां से लाता ?

"ओ हरामजादे, आस-पास के किसी गांव में खबर कर दी होती या मेरे पास दौड़े चले आये होते या जैसे अब पीठ पर लाद कर लाये तो तभी लाये होते । तुझे पानी पिलाने की हिम्मत कैसे हुई ?"

"मालिक परमेस्सर बाबु की हालत बहुत खराब थी, पानी नहीं पिलाया होता तो न जाने क्या हो गया होता ।"

"चुप बदमाश, न जाने किस जन्म का बैर साधा है, मेरा धरम नाश करके ।" 39

यहां पर मिथ्या लोकभिमान, कुल सम्पति का अभिमान को बताया गया है। जमींदार, हरिजनों को फटकारते व गाली देते हुए बताया गया है । वे चाहे तो उनसे किस तरह का सलुक क्यों न करे लेकिन छोटी जाति वालों को उन्हें अपना माई-बाप मान कर सहना ही पड़ता है । उनका बड़प्पन को भी बताया है कि वह मर जाना बेहतर समझते है लेकिन हरिजन के साथ का पानी पीना मंजूर नहीं है ।

2) हरिजनों की भाषा -:

सब लोग तो है बाबू, लेकिन आप नहीं है । अब का बताया जाये कि ये लोग का है । ये सभी नंबरी है । दुनिया आप ही की नहीं उजड़ी है केतनों की उजड़ गयी है । हरिजनों की तो जान सांसत में है । बबुआ । पुरोहित के बेटे की पिटाई हुई तो हरिजनों पर आफत आ गयी । बड़ी जाति के लोगों को यह देखकर अचरज लगा कि धाटि करने के जुर्म में चमार उन्हें पीट सकते है लेकिन अब नहीं सहा जायेगा । 40.

यहां पर हरिजन लोग जुर्म के खिलाफ आवाज उठाते है । वे क्यों बड़ी जाति का का जुर्म सहें । वे भी इज्जतवाले है । अगर छोटी जाति है तो क्या हुआ, उनकी भी भी सबके समान इज्जत है । वे अब मार-पीट अन्याय नहीं सहन करेगें । उनका जुट कर मुकाबला करेगें ।

3) पढ़े-लिखे वर्ग की भाषा :

"हल्लो । एक मधुर स्वर गुंजता है । एक अधेड़ महिला अपने अफसर पति के साथ पधारी है । सामने कुछ और अफसरनुमा लोग खड़े है । " आउ स्वीट यू लुक इन दिस ड्रेस, मेडम । कहकर एक अफसर उनके कोमल करों को अपने हाथ में ले लेता है ।

"रियली । कहकर महिला मुस्कराती है । 4।

जो पढ़े-लिखे लोग है, उनकी भाषा समृद्ध, शुद्ध बोली का प्रयोग हुआ है । वे ज्यादातर बोलचाल की भाषा में भी अनेक अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते है । जो उनके व्यवहार व चाल-चलन को भी प्रदर्शित करते है । सबके साथ-मित्रता, सम्मानता का व्यवहार करते है ।

4) अनपढ़ वर्ग की भाषा :

"ई समाजवाद का है, हो ताउ ?"

"अरे भइया, ई तो मेरी समझ में भी आता-जाता नहीं है । लेकिन लगता है कि कोई अच्छी चीज है । लोग कहते है कि गरीबन के दुख दरद दूर करने खातिर ई आ रहा है ।

-हां ताउ, ई तो हम भी सुनते है, कब से सुन रहे है लेकिन ई मालुम नहीं ई ससुरा कहां तक आया है ।"

"हमको मालुम है हो, ई आया है लाला जी के दुकान पर जो रोज-रोज भाव बढ़ा देता है । ई आया है वो देखों सामने वाले सेठ जी की कोठी पर जो रोज-रोज बढ़ रही है , ई आया है अफसर बन के जेब में घूस बन के, और भइया ई आया है नेता लोगन के मुंह में जहां से थूक की तरह बखत-बेबखत जनता के उपर झरता जाता है ।

"अरे वाह रे भईया, तू तो बड़ा गियानी हे रे, "ताऊ खिलखिला कर हंस पड़ा । 42

यहां पर बढ़ते हुए साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया गया है । गरीब लोग उम्मीद लगाकर बैठते है कि अब हमारे पास समानता का सा व्यवहार होगा लेकिन वह तो रिश्वत वाले बड़े ऑफीसर तक ही सीमित रहता है । "नेता लोगन के मुंह में जहां से थूक की तरह '-- इस पर व्यंग्य किया गया है । ये लोग सोच तो सकते है, विद्रोह नहीं कर सकते है ।

5) 4 <u>पति वर्ग की भाषा</u> :

"कौन सा नाटक शुरू किया आज ?

"नाटक में कर रही हूं या आप । आज समझी कि आपको अपना घर क्यों काट रहा था ?

आज उसका अप्रत्याशित उग्र रूप देखकर विस्मित रह गया । साथ ही क्रोध भी उबल पड़ा ।

डांट कर बोला, "क्या बकवास कर रही है, सिर पर भूत तो नहीं सवार है?" "बोलते क्यों नही, "कौन है यह ? मुझे फांसी क्यों नही दे देते ? मेरा गला क्यों नहीं घोंट देते ? ममता फफक कर रोने लगी - आखिर वह कब तक चुप रहता । कुछ जवाब न पाकर क्रोध ही कर बैठा- "चुप रह, नहीं तो बहुत बुरा होगा।" "अब और क्या बुरा हो सकता है । अब तो मर जाऊं ।" 43

यहां पर पुरूष प्रधान समाज के अधिपत्य रूप का वर्णन मिलता है । वह अपना दोष होते हुए भी स्त्री अपना अधिकार जमाये रखता है ।

6) <u>स्त्री वर्ग की भाषा</u> :

"अरे तू है ही नम्बरी धामड़ । बस बैल की तरह तुझे बोझ ढोना आता है और कुछ नहीं । देख, कल मैं मालकिन के कोटे पर थोड़ा सा आटा लायी थी-- आज रोटी बनाये दे रही हूं, अगर तुने अब आटे का इन्तजाम नहीं किया तो भूखों मरना, बैल कहीं का।" "अरे देख कुतिया, तू मुझे बार बार बैल मत कह, नहीं तो कहे दे रहा हूं ।" " नहीं तो क्या कर लेगा, तू बैल है, बैल है, बैल है । बोल है कि नहीं । मुझे अपने साथ बांधकर तबाह कर दिया । खाना खाना होगा तो आज आटा ले आना नहीं तो "अब देख ले, तू मार खाने पर तुली है तू ही काहे नहीं आटा-बोटा ले आती है । दिनभर छैलों से सान-मटक्का मारती है और--

...274...

"तू मुझे छिनाल कहता है, रे बैल ? मैं दिन भर बीमार बच्चे को पीठ पर लादे चार घर चौका बरतन करती हूं और तेरा पेट पालती हूं तो तू मुझे छिनाल कहता है, बोल हिजरा, बोल तू ऐसी बात क्यों निकालता है।

"बरतन मांजती है सो तो ठीक है लेकिन लोगों से सान-मटक्का भी तो मारती है। मैं देखता नहीं हूं क्या ?"

"अरे अभागे, तेरी तरह मैं भी मुंह फुलाये घूमती रहूं और ततैया की तरह काटती फिरती रहूं तो हो चुकी मजूरी।" 44

यहां पर स्त्रियों के अपने स्वाभाविक रूप से बोलचाल की भाषा में पति-पत्नी की नोंक झोंक का व्यंग्यात्मक रूप मिलता है। स्त्रियां यदि पुरुष की मदद करने या आर्थिक व्यवस्था की पूर्ति करने के लिये यदि कुछ कार्य (मेहनत-मजदूरी) करती है तो इसके लिये उन्हें दूसरों के साथ हंस-कर बोलना, मिलना भी पड़े तो पुरुष उसका गलत मतलब उठाते है। वे चाहते है कि वे कार्य भी करे लेकिन किसी से बातचीत न करे या कोई उनकी तरफ नहीं देखे। मनुष्य को सामाजिक प्राणी होने के नाते मेलजोल तथा मित्रता भी रखनी पड़ती है। हंस-मुख होने से कार्य भी अधिक मिल पाता है। पुरुषों की इस कमजोर प्रवृति को बताया गया है, वे चाहे स्वंय कुछ भी करे, यहां पर आपसी झगड़े का सटीक रूप मिलता है।

7) अनपढ़ स्त्री वर्ग की भाषा :

बसंत, तुझे शरम हैन लिहाज, भाई का हत्यारा, कमीना, पाजी अरे, कही डूब मर, दहिजरा, बेटे की तरह इस कीड़े को पाला पोसा मुंशी जीने, इसे अपना छोटा भाई नहीं, पुत्र समझा, इतना प्यार दिया, अच्छीशादी करायी, अभागा जोरू के आते ही फिरंट हो गया। नीच को निवासा क्या मिला, स्वरग मिल गया। आंख का पानी ही मर गया। कमीने, तू इस घर में आकर रहता तो हम लोग कहीं और चले गये होते, लेकिन तुझे तो आधा हिस्सा चाहिये था, वह भी बेचने के लिये। इस सिमंगला ने तुझे खिला-पिलाकर और झूठी-मुठी बाते कहकर तुझे भाई का दुश्मन बना दिया। अभागे, तुने पैसे के लालच के अपने भइया-भउजी का आधा अंग काटकर बेच दिया। कीरति-हिनन्ना ? जिन हाथों

ले-लूटे खिलाया-पिलाया, उन्हीं का बंटवारा कर दिया । तुने इसे सिमंगला को अपना हिस्सा लिख दिया । 45.

गांव की अनपढ़ स्त्री के मुंह में जो आता है, बोल देती है, वे न किसी का लिहाज करती है, न कोई शिष्टता ही उन्हें होती है । गांव में प्रायः इसी प्रकार की बोली का प्रयोग करते हैं ।

8) पढ़ी-लिखी स्त्री की भाषा :

वे उठते हुए बोली- "मैंने क्या करना है, मैडम, आई शुड नाट कम बेटवीन यू एण्ड हिम, प्लीज एलाउ मी टु गो ।"

" हां- हाँ, आप जाइये ।

"मिस अहलूवालिया, क्या पढ़ाती है मैडम । "पढ़ाती तो सब कुछ है लेकिन इनका अपना विषय अंग्रेजी है ।"

"देखिये मिस्टर राय, क्लास की कुछ डिसिप्लिन होती है, हर लड़के को उससे गुजरना ही चाहिये । लेकिन आपका लड़का कुछ दूसरे प्रकार का लड़का है, उससे बहुत कुछ फार्मलिटीज की आशा नहीं की जा सकती । मैं मिस को समझा दूंगी । 46

यहां पर स्त्री का पढ़ा-लिखा सोबर रूप को प्रकट किया है जो शिष्टता पूर्ण व्यवहार को प्रकट करता है । इस प्रकार हर वर्ग की अपनी बोली, व्यवहार अलग अलग होता है । परन्तु मिश्र जी ने सबका समन्वय रूप से उसका वर्णन किया है । दलित वर्ग की भाषा इनमें देखने को नहीं मिलती है ।

हालांकि रामदरश मिश्र ने नयी कहानी के जमाने से लिखना शुरू किया और सक्रिय कहानी के मौजूदा शोर-शराबे के बीच भी रचनात्मक स्तर पर खूब सक्रिय रहे लेकिन उनकी कहानियां किसी एक सांचे में फिट नहीं बैठती है । अनुभव, बोध और सम्बन्ध के स्तर पर उनमें पर्याप्त वैविध्य है । मिश्र जी ने अपनी अनेक कहानियां व उप0 का आरम्भ संवाद से किया है ।

संवादात्मक भाषा के विविध रूप -:

मिश्र जी की कहानियों व उपन्यास में नाटकीयता का -सा कौशल मिलता है जबकि वह नाटककार नहीं है । फिर भी उनमें यह खूबी मिलती है । उनके संवाद

पात्रों की मन: स्थितियों को प्रकट करने वाले होने के साथ साथ कथा तंतु को भी तीव्रता से व क्षिप्रता से आगे बढ़ाने में सक्षम है। कहीं कहीं तो उनके संवाद पात्रों के एक एक दो-दो शब्दों में चलते है। और मन के गहराइयों के उद्घाटित होते है। ऐसे ही कुछ संवादों का यहां उदाहरण समेत विवेचन किया जा रहा है।

उदाहरण -:

1) "मैं कल स्कूल नहीं जाऊंगा।"

"क्यों बेटे" ?

"टीचर साली मारती है।"

"बेटे, टीचर को साली नहीं कहते वह गुरू होती है।"

"मैं कहूंगा, कहूंगा, साली, कुतिया मुझे मारती क्यों है ?"

"तुम काम करके नहीं ले जाओगे तो मारेगी नहीं।"

"हां, मैं काम करके नहीं ले जाता अरे, साली, कुतिया, मारती है कि तुम्हारी टाई ठीक नहीं है, कालर ठीक नहीं है।

"तो तुम ठीक करके जाया करो,

"मैं नहीं ठीक करता, कालर-फालर, टाई-बाई, जो करना है कर ले साली, कुतिया और मैं पढ़ने नहीं जाऊंगा उसके यहां।" 47

इस संवाद में एक बच्चे का टीचर व स्कूल के प्रति एक आक्रोश की भावना दिखायी देती है। उसी रूप में उसके भाव दर्शाते है। इसके लिये बच्चों के साथ गरमी न रखकर, प्यार का बर्ताव करना चाहिये।

2) <u>ग्रामीण भाषा का संवाद (हरिजनों की भाषा)</u> :

"का हे रे, काहे बहुत मुसकियात बारे।" सुरती ठोंकते हुए किसनलाल ने कहा। "अरे अब मुसकियाने भी नहीं दोगे, किसन महाराज। मैं पूछती हूं, इनको लिये कहां घूम रहे हो।"

"अरे ई। भटकत रहनें हवें, इनके अपने साथ भगा लिहली हई। कहली हई... हमार भंइसि देखि आव। आ जे हमारे भइसि चरावे ला ओहू के दिखि आव।" कहकर किसनलाल इमिरिती को देखते हुई विचित्र ढंग से हंसने लगा।

"ओर-ओर तें चुप रहुं, हम कुल जाने ली, ऽा ई । अरे इ हमें पास दवें,। इनके से मामुली चुक्षत दवे ?"

"हां-हां ई ऐम है और तुम बोले हो । क्या चोड़ी मिलाई है भगवान ने ।" 48

इस उप0 में मिश्र जी ने कई जगह इसी भाषा का प्रयोग किया है परन्तु इसके प्रयोग से उसकी स्वाभाविकता में फर्क नहीं आया है । पात्रों के अनुरूप संवादों का प्रयोग करके कथा में गति को बढ़ा देते है । यह दलित वर्ग की तक्षम भाषा का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

संवाद में स्वाभाविकता और सम्प्रेष्य शीलता :

"पांच सौ रूपये, हां, पांच महीने के है, कम है ।" अरे नहीं, इससे कुछ ही अधिक तो मुझे वेतन मिलता है ।

"सच ?

" हां"

पिताजी से पूंछगी कि ऐसा अन्याय क्यों हो रहा है । 49. यहां पर शिक्षक व विधार्थी का (प्रेमी-प्रेमिका) के रूप में संवाद मिलता है । इसमें नाटकीयता के भावों के साथ साथ मनोभावों की झलक भी मिलती है ।

संवाद में मनोभाव:

भगवान करे कभी उसकी कोख न फूले-फले । मुझे घर से निकाल कर कुल का दिया जलाने आयी थी । अभागिनी, पिशाचिनि, भैंस, देखना भउजी, भगवान कभी माफ नहीं करेगा इन राच्छसों को"।

मां ने समझाया- "नहीं जगरानी, ऐसे नहीं कहते, आर्शीवाद दो कि घर का चिराग रोशन हो ।"

"आर्शीवाद । मैं आर्शीवाद दूंगी भउजी, इन राच्छसों को ।
मैं तो सरापूंजी ।" कहते कहते रो पड़ी । देर तक रोती रही ।
"मैं ही कुलच्छनी हूं भउजी, मैं करमजली हूं । न जाने क्या क्या कह जाती हूं । 50.

यहां पर दो औरतों के बीच का संवाद है । इन संवादों में दुख्यारी नारी के मानसिक भावों को शब्दों के माध्यम से प्रकट किया गया है । एक औरत के औलाद न होने पर दूसरी संतान लाने पर उसके प्रति खीझ स्वाभाविक है । तभी वह अपने

ससुराल वालों के प्रति नफरत की भावना और अपने प्रति हीन भावना को इन शब्दों में प्रकट करती है ।

कटु-मनोभावों का तादृश्य चित्रण -:

शोध कर रहा हूं तीन साल से, शोध नहीं करता तो क्या करता ? अच्छी डिवीजन आने पर भी कहीं नौकरी नहीं मिली । कहां कहां नहीं गया । क्या-क्या नहीं भोगा ? नौकरी.... नौकरी .... नौकरी.... दिशा-दिशा चिल्ला रही है... रास्ता रास्ता चिल्ला रहा है । कहां है वह ? कौन उबारेगा मुझे इस बेकारी के सन्नाटे से, कौन उबारेगा ? भगवान यह नौकरी तो तुमसे भी दुर्लभ हो गयी है, नहीं मिलेगी । क्या कभी नहीं मिलेगी ? हितोषियों ने सलाह दी है कि पी० एच० डी० कर डालो । 51.

शिक्षित होने के बावजूद भी यदि व्यक्ति दर-दर भटकता रहे, उसे कोई नौकरी नहीं मिले तो उसकी स्थिति बहुत दयनीय हो जाती है । उसी मानसिक स्थिति का यहां मार्मिक वर्णन किया है । पढ़े-लिखे व्यक्ति को अपने आप से भरोसा उठ जाता है । उसको अपने आप से हीन-भावना तथा समाज के प्रति क्षोभ को प्रकट करता है । उसके इसी रूप को मिश्र जी नये तुले दो टूक शब्दो में प्रस्तुत करते हैं । शिक्षित होने की वजह से न तो उसे नौकरी ही मिलती है, नहीं वह कोई काम-धंधा करके रोजगार ही प्राप्त कर सकता है ।

भाव-अभिव्यंजक भाषा -:

मां, मां, वह मां शिकंजे में फंसी हुई है । क्या? क्या, वह जवान होकर भी बच्चे की तरह मां के इशारे पर चलती रहेगी । क्या वह मां के खिलाफ विद्रोह करके कह नहीं सकती कि नहीं, वह डा० सूर्य के यहां नौकरी नहीं करेगी, वह बी०लाल से शादी करेगी । इस जमाने की लड़की होकर भी उसने मां के इशारे पर अपने को सौंप दिया है - नहीं, वह विद्रोह नहीं कर सकती । मां के सिवा कौन है ? उसका दुनिया में । मां उसके भले के लिये तो सोचती विचारती है, जीती मरती है, ठीक ही तो कहती है कि किसी की रखैल बनने की अपेक्षा नौकरी करना ज्यादा अच्छी है । रखैल । हां, अधिकार हीन पत्नी रखैल ही तो होती है और यह शादी भी

तो अपनी जाति-पांति में नहीं हो रही है । बी0 लाल मजबूरी में शादी कर रहा है । ब्राह्मण होकर ईसाई से । मन का बहका हुआ आदमी है, पता नहीं, कब मन भर जाये और उसे दूध की मक्खी की तरह फेंक दे, नहीं, बी0 लाल उससे प्रेम करने लगा था । 52.

जब व्यक्ति का मन स्थिर नहीं होता है तो कोई महत्वपूर्ण निर्णय, नहीं ले सकता है । उसके मन में कई भावनाएं व शंकाएं आती है । मन के उसी अंतद्वंद्व का वर्णन यहां होता है । बच्चे जब बड़े हो जाते है तो वे अपना निर्णय स्वयं लेना चाहते है यदि उसके निर्णय में उसकी मां या अन्य कोई विरोध करता है तो वह उसे अपना नहीं समझते है, वे ये सोचते है कि ये अपने स्वार्थ के वशीभूत उसके निर्णय को स्वीकार नहीं कर रहे है । लेकिन मां-बाप हमेशा अपनी औलाद के सुख को ध्यान में रखकर उसके भविष्य के प्रति निर्णय लेते है । प्रस्तुत संदर्भ में लड़की इसी अन्तरद्वंद्व में रहती है कि वह मां के फैसले को स्वीकार करे या स्वंय ही कोई कदम उठाये । इसी बात को लेकर उसके मन में अनेक विचार उठते है ।

अन्तरद्वंद्व भावना :-

नहीं, वह इनके पाप में शामिल नहीं होगा, अपनी आत्मा की आवाज को चुप नहीं करेगा लेकिन घर के इन अभावों का क्या होगा । क्या होगा ? क्या होगा । उसे चाहिये कि कुछ पैसे इकठ्ठा कर ले, दुनिया भर के न्याय और सत्य का ठीका लिये बैठा है । जब घर में अकाल पड़ेगा तब कोई भी सत्य और न्याय सहायता के लिये नहीं आयेगा, केवल पैसा ही साथी होगा । हां, ठीक ही तो है-लेकिन पैसे को खींचने के लिये भी तो पैसे चाहिये । मजदूरों को रोज पैसे चुकाने पड़ेंगें । कुछ डेढ़ दो हजार खर्च करने पड़ेगे पहले, नहीं, वह नहीं कर सकता, यह उसका रास्ता नहीं है । 53.

सत्य के मार्ग पर चलने वालों को बहुत ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है क्योंकि सत्य पर चलने वालों का सभी साथ छोड़ देते है, जमाना चापलूसी व रिश्वत खोरों का है । वे सत्य पर चलने वालों को डगमगाते है लेकिन अपना निर्णय यदि स्थिर है । तो वह नहीं हिलेगा । मुश्किलें उठाने के बावजूद भी अंत में उसकी जीत होती है । पहले तो उस पर अनेक संकट आते है तो उसके मन में विचार आता

है कि उसके अकेले लड़ने से क्या होगा । इससे अच्छा तो यह है कि वह भी दूसरों की तरह पैसा बटोरे तथा सुख से जीवन यापन करे । लेकिन उसका ईमान न्याय व सत्य का पक्ष लेता है । इसी अन्तरद्वंद्व का यहां प्रस्तुत किया गया है ।

शब्द–ध्वनि चित्रण :-

भूतों और चुड़ैलों का दल नाचता हुआ जा रहा है, भांय-भों-भांय- सारा गांव रो रहा है । वह बंसवारी चूं-चूं, चरमर चीं चीं कर रही है । सुनी-सुनी हां, वहां मत जना, उसमें रात को चुड़ैलों का रास होता है । हां, हां, रोज सुनाई देता है - किरी-- रिंरी रिरीं रिड़ रिंरी एक सारंगी बजाती है । ठिंड-ठिंड - धाय धिंधाथ धिधप्प्य, अहा, हा क्या तबला बजता है । छन-छम, छम्मक-छम्मक- खूब बढ़िया नाच होता है । भाई, मैंने अपने कानों से सुना है । रात को तहसील की सारी चुड़ैलें और देवियां वहां इकट्ठा होती है । 54

टीका- मिश्र जी ने यहां पर रास शब्द का प्रयोग कृष्ण की रास के लिये रूढ़ हो गया है । उसे यहां चुड़ैलों के व्यवहार में प्रयुक्त करके मिश्र जी ने परिस्थिति की कटुता और संस्कार हीनता की व्यंजना करने का सफल प्रयत्न किया है । रास को हम पूर्वकथन भी कह सकते है तो उस उदात्त प्रकार के (meth) का नीचतापूर्ण व्यवहारों के लिये प्रयोग करके परिस्थिति की कटुता और दयनीयता के प्रति संकेत किया है ।

2) कुएं पर पानी भरे जाने की आहट, नांद में मुंह डालकर बैलों के सानी-पानी सुड़कने की आवाजें, हल हेंगा ठीक करने की आवाजें, हलवाहों के आने-जाने की आवाजें, फिर बैलों की घंटियों की आवाजें, खेतों में दलों की धड़कने, बीया और हेंगा के लिये पुकार लगाती आवाजें और एक घंटा दिन चढ़ने के साथ किसी खेत के जुत०को जाने की सुचना देने वाली हर हर महादेव की आवाजें, उसे लगता है, हर आवाज उसमें है या हर आवाज में वह है ।

मिट्टी की तरह तरह की गंध उसके परनों में बसी है । दशहरे के मेले की गंध, जुते-जाते खेतों की गंध, अलगानियों पर सुखो ... रेशमी कपड़ों की गंध,

धूप में सुखती मक्के की बालियों की गंध, बगीचे में उगी हुई घासों की गंध, दीवाली की गंध, भैया दूज की गंध, और गंध के साथ, वह गंध का अलग अलग रंग । इस गंध और रंग के वह दिल्ली में कितना तड़पता रहा है । 55.

विविध अनुरणनात्मक ध्वनियों का प्रयोग भी सार्थक एवं परिवेश व्यंजक है । लोक गीतों के माध्यम से उपन्यासों में लयात्मकता और अंचल का दर्द मुखर हुए है । ध्वनियां श्रोत बिम्ब भी लय को संजोती है ।

पुक-पुक-पुक पुक {मशीन की ध्वनि} भट-भट-भट-भट {ट्यूब वेल की ध्वनि}, पड़-पड़ पुर-पुर {डांठों के फटने की ध्वनि} हट्ट-हट्ट {खलिहान की गूंज}, उई उई {बकरी को पुकार ने की ध्वनि}, कुच, कच, कुच-कुच {कुचकुचिया पक्षी}, कु ऊ ऊं ऊं ऊं {कुते का रिरियाना}, मुईओ, मुईओं {पक्षी का रिरियाना}, किटीं, रिंटी किंरी {सारंगी की ध्वनि} खड ड ड खन-खड ड ड खन {जूतों की आवाज} सपासप {बेंत की मार की ध्वनि}, धम्म-धम्म {पीठ पर मुक्के मारने की आवाज}, धुर-धुर धुर-धुर, {पानी गिरना}, गड्डुम गड्डुम- कड्डक-कड्डक - छर छर छर छर {बादल, बिजली, बरसात की ध्वनि}, हहहास-हहहास {लहरों का गरजना}, झांप-झांप-झांप {बरगद का हहराना}, आदि अनुरणात्मक ध्वनियां है । जो कभी कभी प्रकृति का सन्नाटा, कभी भयनाव शोर कभी परिवेश का रीतापन, कभी पात्रों की मनः स्थिति को प्रकट करता है ।

<u>व्यजंक शब्द विधान</u> :

वह अकेला है, अकेला है, अपने से कितनी बात करें । भीतर से बाहर तक रीता है, पेट भी रीता, मन भी रीता परिवेश भी रीता, अतीत भी रता वर्तमान भी रीता, भविष्य भी री-- भविष्य की कौन जाने ? वह रीता है या अंधकारमय है या है ही नहीं, लगता है ही नही । 57

इस प्रकार से मिश्र जी ने अपनी कहानियों व उपन्यासों में अधिकांशतः ध्वन्यात्मक वर्णों का प्रयोग किया है । क्योंकि वे स्वंय एक कवि है । अतः गंध में भी उसी लय-ताल को बनाये रखते है । जिससे सजीवता बनी रहे ।

भाषा को सुन्दर और सुचारु बनाने के लिये लेखक उसमें विशेषणों आदि का भी प्रयोग करता है जिससे उनकी भाषा में चार चांद लग जाते है । मिश्र जी भी इस

दिशा में पीछे नहीं हटे है उन्होंने भी अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है । यह उनकी भाषा की विशेष विशेषता है जो उन्होंने उन शब्दों का सटीक प्रयोग किया है।

विशेषण वक्रता :-

एक मासूम चेहरा, एक शहर की रंगत से चमकता मलीन चेहरा, एक नुकीला दाढ़ी चुभाता इन्टेलीजेंट कलाकार चेहरा । एक ही चेहरे के कितने रूप ? 58

2) ये कई मंजिला इमारतें, ये कई मंजिला लोग, ये रंगीन बंगले, ये रंगीनबाजार कनॉट प्लेस, रंगीन होटल, रंगीन फब्वारे, रंगीन औरतें, रंगीन समृद्धि और सबके ऊपर छाया हुआ एक रंगीन भय ... 59

3) यह दिल्ली तो कोई और है... खांसती हुई दिल्ली बलगम फेंकती हुई दिल्ली नंगी भीगती हुई दिल्ली, भूख से टूटती हुई दिल्ली, पुलिस के डंडे से पीटती हुई दिल्ली, जूं और चीलर से भरी गुदड़ी लपेट हुए दिल्ली, बिना किसी अपराध के हथकड़ी पहनती हुई दिल्ली, खाज और कोढ़ से सड़ती हुई दिल्ली, वाह रे राम जी, तुमने खुब दिल्ली देखी । 60.

यहां पर विशेषण वक्रता का बखूबी प्रयोग मिलता है । जिससे भाषा के सौंदर्य में तीव्र गति आ जाती है । सटीक शब्दों के माध्यम से वास्तविक दृश्य सामने आ जाता है ।

सजीव क्रिया वैचित्य -:

कुछ वाक्यों के प्रयोग में भी केवल विशेषणों का ही प्रयोग मिलता है । जिससे भाषा में भी परिवर्तन आ जाता है । जैसे -1) बिलखने लगी, अहकने लगी, सिसकने लगीं, हुचक-हुचक कर रोना, भर भराकर रोना ।

2) ऐसे देखकर मुस्करायी, जैसे श्मशान में चिता की लौ जल उठी हो । 61

3) बेला की जीवन नैया के खेवनहार । खुशबू के मस्त झोंके के दामन में अटके हुए सूखे पत्ते की तरह, भरी पुरी छाती के रक्त प्रसार में घुसकर उसे सोखाने वाले तपेदिक के एक कीटाणु की तरह । 62.

4) आखिर कब तक तैली के बैल की तरह जुएं को खींचेगा । 63.

5) मजबुरी से छटपटाते नारीत्व को वासना की जीभ से निगल जाने वाले एक

खूंखार नर पशु की कहानी, आंखों को आंसू से सराबोर कर देने वाली कहानी, हृदय को प्रतिहिंसा की आग से धधका देने वाली कहानी, अपने ही घरों की बहनें, बेटियों के रुदन से भींगी हुई कहानी । 64

6) उसे याद आई रोती हुई बरसातें, नस-नस में अकड़ती सर्दी की सुबहें, जेठ की धूल से बलबलाती हुई राहें, और उसकी भूखी-प्यासी असफल यात्राएं, खाली जेब, भारी-भारी शामें और सामने रिक्तता का विराट सन्नाटा । 65

इस प्रकार मिश्र जी ने विशेषणों का बहुत ही सुन्दर प्रयोग किया है ।

अलंकारों का प्रयोग :

भाषा में सौंदर्य बढ़ाने के लिये विविध अलंकारों का प्रयोग भी किया जाता है । रामदरश मिश्रजी इस प्रयोग में भी पीछे नहीं हटे है । जिस प्रकार नारी सौंदर्य को बढ़ाने के लिये आभूषणों की जरूरत होती है । उसी प्रकार भाषा की सुन्दरता बढ़ाने के लिये अलंकारों का प्रयोग किया जाता है । मिश्र जी ने अपने कथा-साहित्य में अनेक जगहों इसका प्रयोग किया है ।

1) टिप-टिप-टिप-टिपिर; धरर-धरर ईंटों, की उठती गिरती खनक-अनवरत, एक दूसरे को काटती और आपस में लिपटती तिहरी आवाजें--- एक अजब यांत्रिक स्वरों का घेरा कांपता रहता है और इस यांत्रिक घेरे को तोड़कर एक आवाज उठती है । 66

2) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार -:

और शक्ल में शक्ल, शक्ल में शक्ल, शक्ल में शक्ल, — खर— खर-खर— कुछ कुछ फूल के -- कुछ -- न जाने क्या-क्या है । 67.

3) नदी-- नदी-- पार कस्बा — फिर टीसन— फिर टीसन— और टीसन ही टीसन फिर कलकता शहर । उसके कान में गाड़ी की आवाज भर गयी — छुक-छुक— पइसा, चल कलकता— चल कलकता — चल कलकता— 68

4) उपमा अलंकार -:

उसने हल्के से आंख खोली, धीरे से मुस्कराया, जैसे, किसी शव के चेहरे पर हंसी का लेप कर दिया गया हो । 69

...284...

एक ही शब्द की कई बार आवृत्ति तथा ध्वन्यात्मक वर्णों का प्रयोग, भाषा में सौंदर्य और लय की गति प्रदान करते है ।

रुपक अलंकार -:

वे सब एकाएक उभर गये जैसे बरखा का पानी पाकर एकाएक धरती के भीतर की गरमी भःभःा कर फूट जाती है । 70

2) बहू बहुत सुन्दर और सुकुमार है - .. नाक सुग्गा का ठोर है, ओठ पान की पत्ती है, आंख आम की फांक है, लिलाट दूज का चांद है, मुंह बाग-बाग बरता है । काले-काले बाल कमर के नीचे तक लहराते है । 71

यहां पर रुप सौंदर्य का इस खुबी से वर्णन किया गया है । इसमें उपमा और रुपक अलंकार का प्रयोग है ।

किसी भी कवि के लेखन में कल्पना, विलास और आलंकारिता स्वाभाविक रुप से कभी-कभी या तो दबाव डालती है या उसकी अधिकता हो जाती है । मिश्र जी का कथा-साहित्य इस स्थिति का अपवाद है । क्योंकि उनके कथा-साहित्य में किसी भी स्थान, देश या व्यक्ति के वर्णन में अलंकारों का दबाव और उनका आधिकाय महसूस नहीं होता है । उनकी अभिव्यक्ति में अलंकार अनायास आ जाते है । ऐसे अलंकार उपयुक्त स्थान पर आते है और वस्तुस्थिति की विशेषता के उजागर होते है । जैसे - प्रसाद जी के ऊपर आक्षेप लगाया जाता है कि उनके नाटक और उपन्यास अलंकार प्रदान और काव्यात्मक विशेष बन गये है । ऐसा कोई आक्षेप हम मिश्र जी के कथा-साहित्य पर नहीं लगा सकते है । मिश्र जी ने बहुत ही तटस्थता के साथ वस्तु स्थिति का तादृश्य वर्णन नपे तुले शब्दों में प्रस्तुत किया है ।

शुद्ध और परिमार्जित भाषा :

प्रत्येक रचनाकार चाहता है कि उसकी रचनाओं में स्वाभाविकता, सरलता, और सुचारुपूर्णयत: बनी रहे । अत: वह ज्यादा से ज्यादा भाषा को सुन्दर बनाने की चेष्टा करता है । उसकी शुद्धि व गुणों पर पूरा ध्यान देता है । जिससे उसकी मौलिकता नष्ट न हो जाये । इसके लिये भाषा में हास्य, प्रवाहमय, गुण, माधुर्य आदि होना चाहिये । भावों व विचारों के अनुकूल ही भाषा का प्रयोग होना चाहिये । कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा बात आ जायें, का ध्यान रखना

पड़ता है । रामदरश मिश्र की ऐसी ही वैविध्य रूप भाषाओं के उदाहरण यहां प्रस्तुत किये गये है ।

कथा प्रसार गुण :

कौन है वह । चलते-चलते रामदरश ने कहा ।

"कहां ?

" वो देखिये न, साइकिल गिरी हुई हैं और आदमी भी कटे पेड़ की तरह गिरा हुआ है । "अरे हां रे, चले देखें ।"

"अरे ये तो परमेश्वर बाबू है, अपने रामदेव बापू के लड़के । बेहोश पड़े है ।"
"हां, है तो वहीं, कहते कहते रामदरश का मुंह तीता हो गया ।
इन्हें क्या हो गया है । सुन तो कुछ कह रहे है ।
रामदरश ने उनके मुंह के पास झुककर सुना- वे बुदबुदा रहे थे -- पानी-- पानी
"पानी । कहां पानी कहां मिलेगा ।"
"अरे चलिये दादा, मरने दीजिये इस पापी के पापी लड़के को।" 72

यहां कथा में स्वाभाविकता है । कथा स्वयं ही आगे बढ़ती जाती है । इसका प्रारम्भ संवाद से है और प्रश्नात्मक है । आम सरल तत्सम शब्दों से पूर्ण भाषा है । कटु और संयोगत से युक्त भाषा का प्रयोग है ।

प्रवाहमय भाषा :

खाना खा चुका हूं अपने एक दोस्त के यहां....
"झूठे कहीं के ।
"सच मानो संध्या ।
लगा, जैसे एक क्षण के लिये बचपन के सरल दिन लौट आये ।
"अच्छा तो आराम करो उस कमरे में । "बात करने से अब भय लगता है।"
संध्या सिहर उठी - मुझे तुम्हारे आराम का ख्याल है । सच। नीरू ने मुस्कराकर पूछा । संध्या को लगा कि नीरू ने उसे व्यंग्य की सुई चुभो दी है ।73

इसमें वाक्य सरल और छोटे छोटे है । वाक्यों में मनोस्थितियों को व्यक्त किया गया है ।

स्वाभाविकता -:

"पिताजी डरते हहुतहं, तु भी डरता है रे पन्ना,

" नहीं-नहीं, मैं तो नही डरता । अच्छा तो जा, उस पीपल के नीचे अकेला हो आ ।"

नहीं, वहां जाकर क्या होगा ?

होगा कुछ नहीं, लेकिन तेरी परीक्षा तो हो जायेगी । नहीं, मैं नहीं जाऊंगा, मुझे वहां जाने में डर लगता है ।

"क्यों वहां क्या बैठा है ।"

"पता नहीं, क्यों डर लगता है, बदरी भईया, लोग कहते है उस पर भूत रहते है। मरने के बाद लोगों के घंट बांधे जाते है न । इसलिये ।

"कभी देखा है भूत।"

" नहीं, देखा तो नहीं है ।" 74.

भाषा में आश्वास्त, गतिशीलता :

"नहीं, सिसको मत, खा लो और घर जाओ ।"

"मैं घर नहीं जाऊंगी ।

"तो क्या करोगी ।"

"कहीं डूब मरूंगी, तंग आ गयी हूं इस जिंदगी से।" नहीं, ऐसी बात मत करो ।"

"तो कैसी बात करूं । किसके सहारे जियूं ।"

"खोजोगी तो सहारा मिल ही जायेगा ।"

"तुम" ?

उसने उसका हाथ थाम लिया, "जाओ, घर जाओ और मेरे साथ चलने की तैयारी कर लो ।"

"और तुम्हारी पढाई ।"

"नहीं, कोई नहीं है मेरे साथ ।" 75

इसमें हताशा व गतिशीलता का प्रयोग है ।

माधुर्य गुण और कोमल वृत्ति :

"और मेरी इच्छा होती है, इच्छा होती है — नहीं बताऊंगा ।"

"बताइये न मास्टर जी"

"नहीं, नहीं बताऊंगा"

"हाय, क्यों नहीं बताएंगे, मेरी कसम बताइये न, "तेरी कसम, इच्छा होती है, होती है, नहीं कुछ नहीं होती ।"

"जाइये, आप बहुत सताते हैं ।"

" तुमसे भी अधिक ।"

"बताइये न क्या इच्छा होती है, मेरी तो सब सुन लेते हैं, अपनी बताते ही नहीं।"

"तो ले सुन, इच्छी होती है कि तुझे दुल्हन बनाकर घर ले चलूं ।" 76

मिश्र जी की भाषा जैनेन्द्र जी की भाषा के समान सुखी भाषा नहीं है लेकिन एक भावों से, कल्पनाओं से और अनन्त विचारों से भरी हुई होने के कारण लालित्यपूर्ण रमणीय भाषा है ।

दूसरी विशेषता यह है जैसे प्रसाद जी ने उपन्यासों व कहानियों की काव्यात्मक भाषा में देखने को मिलता है वैसा मिश्र जी की भाषा में अलंकारों से भरी तथा पांडित्यपूर्ण नहीं है । ग्रामीण परिवेश के चित्रण की विविधता के कारण मिश्र जी की भाषा में वह सहजता व ताजगी मिलती है जो प्रेमचन्द जी के कथा-साहित्य में देखने को मिलती है ।

कवितापन का प्रयोग :

रामदरश मिश्र जी पहले कवि है इसीलिये इनकी कहानियों में कविता की दरकलन्दाजी कम नहीं है । इसके विषय में वे अचेत भी नहीं है । वे खुद स्वीकार करते है कि " न कविता मेरी इन कहानियों की संरचना के बीच बार बार आती है । समाजिक समस्याओं, सम्बन्धों और स्थितियों वाली कहानियों में भी इनका भरपूर उपयोग किया है । मैं मानता हूं कि जीवन के एक टुकड़े के अनुभव को उसके पूरे अंतरंग विस्तार के साथ वातावरण में रमाकर चलने वाली कहानियों की संरचना वर्णनात्मक नहीं हो सकती, उनकी संरचना काव्यात्मक प्रतीकों और बिम्बों से मुक्त नहीं हो सकती । मेरी कहानियों में कविता का यह दखल कहां तक शक्ति बन सका है और कहां तक कमजोरी, इसका फैसला तो पाठक के हाथ में है । मेरे मूल संस्कार

कवि होने के नाते मेरी कहानियों में काव्यात्मक का काफी दबाव है । 78.

मिश्र जी अपनी जिन कहानियों व उपन्यासों में कविताओं का प्रयोग करते है। उनके उदाहरण इस प्रकार से है ।

1) कि मेरा तन डोले हो मन डोले हो
गेरे मन का गया करार हो
कौन बजाये बांसुरियां
कि आ रे किसुना
कौन बजाये बांसुरिया 79.

2) छोड़ बाबुल का घर....
अपने पी के नगर तुमको जाना पड़ा । 80.

3) मेरा नाम है चमेली,
मैं हूं मालन अनवेली
चली आई मै अकेली बीकानेर से
ऐ दरोगा बाबू बोलो
जरा दरवज्जा तो खोलो
दरवज्जे पर में खड़ी हूं बड़ी देर से । 81

यह गीत वोली के उत्सव के समय गाते है जबकि वातावरण(आसपास के लोग ईश्वर्यट्रिव से लिप्त है) को केन्द्रित करता है ।

4) छूने न दूंगी मैं हाथ रे
नजरियां से दिल भर दूंगी । - 82

5) जाने क्या ढूंढती रहती है ये आंखे मुझमें राख के ढेर में, शोला है न चिनगारी । 83.

मिश्र जी ने कुछ प्रचलित गीतों का भी प्रयोग अपने उपन्यासों में किया है । उन गीतों की धुन, संगीत की आवाज उनके उप0 में भी निरूपित होती है ।

अतलवा क पनिया पतलवा जा

हमार मेंहदिया छुटा जा

हरि-हरि पवन बहे पुरूइया नदिया डोले ए हरी,

जुल्मी बदरा घिरि घिरि आवे

पापी तड़पि तड़पि डरवावे

हरि-हरि पिया पिया पपिहवा

बनवां बोले ए हरी । 84

गांव में बाढ़ आने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है लेकिन फिर भी त्योहार आने पर उदासी के रूप में थोड़ा उल्लास लिये लड़कियां ये गीत गाती है ।

कि अइहो लोगवा

रोज ले जिनिगिया

जुलुमवां की छइयां कि अईहो लोगवा

कांपे ले निथाउ

और धरमवा की गइया कि अइहो लोगवा,

पान खा के, छुरिया छिपा के बेईमनवां,

हंसे ला कराइया कि अइहो लोगवा । 85.

यह पंक्तियां गोरखपुरी भाषा में गायी गयी है । चुनाव के समय प्रतिद्वंद्वी व्यक्ति के विरूद्ध प्रचार करके उनके उनके प्रति भावों को व्यक्त करता है ।

बरषा काल मेघ नभ छाये

गरजत लागत परम सोहाये

धन घमंड नभ गरजत घोरा

प्रिया हीन डरपत मन मोरा,

दामिनी दमक रही धन माही । 86.

ये पंक्तियों तुलसीदास के दोहों से ली गयी है, शारदा के मास्टर जी नहीं आने पर उस समय की परिस्थिति के अनुसार उसकी दशा भी उसी तरह होती है । जैसी वह तुलसी के इन दोहों के पढ़ने से होती है । इन दोहों के माध्यम से उसके भावों को व्यक्त किया गया है ।

दिन धीरे धीरे ढलता है
हो जाय न पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो है दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पंथी भी
जल्दी-जल्दी चलता है । 87.

मिश्र जी ने बच्चन की इस कविता के माध्यम से शाम को लौटते हुए व्यक्तियों की थकान के भाव को व्यक्त किया है कि व्यक्ति को निष्क्रिय भाव से कार्य करना चाहिये ।

कर रहे हैं मेघ गर्जन
यह प्रलय का राग अनहद
कर रहा है नया सर्जन
प्रिये इसको सुन रही हो
आज भी तुम क्या अरे
रेशम स्वरों से प्यार अपना बुन रही हो । 88

यह प्रगतिवादी कविता है । जो उल्लास के भावों को व्यक्त करती है ।

बहरे बबैया रोवे, भीतरा जे भैया रोवे
डोलिया क बांरू धइले भैया रोवे
बहिनी पराई भइला ......

बाबा जे रोवेले जूनी जूनी
जब नहाये क जुनिया
घर में के बेटी कहां गइलू हो
हेतु धौतिया से डोरिया,
मइया जे रोवेली जूनी-जूनी
जब सूते क जुनिया
गोदिया के बेटी कहां राइलू हो
कइलू गोदिया तू सून । 89.

शादी के समय जब बेटी के बिछुड़ने का वक्त आता है तो वह करुणा भरा दृश्य सामने आ जाता है। मिश्र जी तो वैसे भी बहुत ही भावुक कवि है। ऐसे दृश्य देख कर वह अत्यन्त द्रवित हो उठते है। यह गीत भावनाओं और दुख को प्रकट करता है।

वाह रे बाबा वाह-वाह
वाह रे बाबा वाह-वाह
चट्ट चट्ट चट्ट चट्ट चट्ट,
चप्पु चपु चप्पु चप्पु चप्पु चप्पु
किंण किंण किंण किंण किंण किंण किंण
वाह रे बाबा वाह-वाह
सानि तूने जब पेटे में डरलें
ऊपर से मांगे सोहारी हो शाम लाला
कैसे बनी कचनारी 90

इन गीतों में ध्वनि प्रकट होती है जो खुशी का इजहार करते है।

अब सहा जाता नहीं है
कहीं भी ठहराव
समय जल सा,
जहां से पकड़ो वही से टूट जाता है,
हाथ में आया न आया
रेशमी रूमाल सा पल छूट जाता है
भटकती फिरती हवा में
छूट तट से नाव .... 91.

हवा की चुभन
जल की छुवन
में बढ़ गयी है प्यास
कौन कहां ठहरे

बह-बह जाती है छुए बिना

सांस से सटकर सांस..... 92.

यह पंक्तियां वातावरण को उत्साहित करते हुए गायी गई है जो खुशी व उल्लास का प्रतीक है ।

प्रेम मगन मुख वचन न आवा

पुनि-पुनि पद सरोज शिर नावा

सादर जल ले चरन पखारे

पुनि सादर आसन बैठारे

कन्द मूल फल सरस अति, दिये राम कर आन,

प्रेम सहित प्रभु खायउ, बारहिं बार बखान 93

छोटी जाति पर होने वाले अत्याचारों को देखकर यह पंक्तियां उस समय वातावरण को उद्घृत करती है । क्योंकि प्रस्तुत पंक्तियों में भी अवधि भाषा में राम व शबरी भगवान और भक्त {हरिजन} का चित्रण है ।

सागर, फूलों का सागर, आंखों से बहा नहीं जाता है -

क्षण-क्षण हांक दे रही कोयल

प्राण पपीहा खींच रहा है

गंधों की फुहार से तरू-तरू

वन का आंगन सींच रहा है

टूट रही दीवारें जैसे घर में रहा नहीं जाता है ... 94

जब व्यक्ति मानसिक रूप से प्रसन्न होता है तो उसे उस समय वातावरण भी पुफुल्लित दिखायी देता है । ऐसे वातावरण में ऋतु को अपने पति का साहचर्य प्राप्त होने से स्वयं ही यह पंक्तियाँ याद आती है ।

मन मेरा इस मदन महोत्सव में

शिशु सा फूलों-फूला सा

हर सौंदर्य, लहर के पीछे

विह्वल सा भूला-भूला सा

दौड़ रहा बाँहे फैलाए, कुछ भी गहा नहीं जाता है । 95.

यह पंक्तियां भी वातावरण को उद्घाटकरते हुए कहीं गयी है । उस समय का वातावरण मदन-महोत्सव सा प्रतीत होता है । हवा में भी एक अदम्य ध्वन थी जो एक गहरी पीताभा को जागृत करती है ।

टन - टन - टन -
थर्रा उठा सारा टीसन
निष्पत्र सेमलों पर
भारी चेहरों पर
लहराती हिलती एक रोशनी तैर गयी
क्षण भर को टूट गये जैसे सारे तनाव
टीसन की पथरायी आंखों में
आशा से गाड़ी के अनगिन चेहरे
हंसले कौंध गये
गाड़ी उदास प्रतिध्वनि की रेखाएं झरती चली गयी.
टीसन ने फिर
गाढ़ी निद्रा का काला कम्बल ओढ़
केवल........केवल........
बेटे को देकर विदा युद्ध के लिये एक मां की शायद
सिसकी सूने में भटक-भटक कर टूट रही है । 96.

यह पंक्तियां उदासी को प्रकट करती है । जब गाड़ी किसी देहाती स्टेशन के प्लेटफार्म पर से गुजरती है । तो उस समय के यात्रियों के चेहरे पल भर के लिये बरस पड़ते है, मायुस हो जाते है बिछुड़ने पर । ऐसे समय में श्रुतु भी ट्रेन में सफर करते समय यह सब देखकर कविता की यह पंक्तियां याद करती है ।

महुए के फूल झर गये
सुना है बसन्त चला गया
हांक लगाते कितने बौरे क्षण, उन्हीं घाटियों
से गुजरे होंगे,
जल में खोयी रेखाओं जैसे, मेरे तेरे स्वर उभरे होंगे ।
बहुत दिन हुए घर गये,. 97...

इन पंक्तियों के माध्यम से अपने बीते दिनों को याद करते है । केवल स्मृतियां ही रह॰जाती है ।

लम्पत पर चम्पतं
पुष्टि प्रहार: उदर मध्ये
उपानंद शिरे उपर
तव भगिनी मम संगे पलायते
ओम शिव, ओम हरि ओम पवन सुत: .... 98.

यह संस्कृत का श्लोक है जो गांव का एक आदमी पुरोहित को चुनौती देने के लिये कहता है ।

अया च तत्र गन्तव्योमम धर्म: सनातन:
तव चैव प्रसादेन न में प्रतिहता गति । 99.

मिश्र जी ने केवल कविता ही नहीं बल्कि भागवत कथा के संस्कृत के श्लोक को भी लिया है । जो वातावरण को उद्धृत करता हैं ।

यों तो पहले भी कई तन्हाइयां गुजरी मगर
आज पहली बार लगता है कि मैं तन्हा हुआ । 100.

व्यक्ति जब परेशान हो जाता है । समय भी उसको बोझ लगने लगता है तो ऐसे समय में उनके मुख से यह कविता फूट पड़ती है ।

अकेली आंखों में आंखों के उगे आते है फूल,
दूर जितना घर हुआ उतना ही मन घर सा हुआ । 101.

यह पंक्तियां भी स्मृति के आधार पर गायी गयी है ।

शब्दों के विविध रूप :

विविध भाषा- भाषी का देश होने के कारण यहां पर बहुत सी भाषा का समवन्य मिलता है । मिश्र जी के उप० पर भी इसका प्रभाव कहीं कहीं देखा जा सकता है. उन्होने भी अपने कथा-साहित्य में शब्दों के विविध रूपों का वर्णन किया है । जिसमें उन्होनें विविध भाषाओं के शब्दों को लेकर लोक भाषा का भी पूर्णत: प्रयोग भी अपनी भाषा में करते है । जिसमें ग्रामीण भाषा, अंग्रेजी भाषा तथा मुस्लिम भाषा के शब्दों को प्रयोग किया है जो इस प्रकार से हैं ।

तत्सम शब्द -:

भंगिमा, मरणासन, आशंका, प्रहार, चकन्दन, स्तब्ध, वितृष्णा, फेनिल, उछवास, नव जागृत, कथामृत, संभ्रम, अमानुषिक, आर्द्रता, बोशिनाखत, हितैषी, इतिश्री, अन्ततोगत्वा, संभ्रम, अमानुसिक, आर्द्रता, विपर्यस्त, कुकत्यों, अमर्ष, संपृक्त, वज्राघात, परिणति, अंतपृक्त, जिजीविषा, मार्दव, परिमार्जन, निष्कंटक, एकाग्र, अपरिहार्य, पूर्णाहुति, दिवगंत, मुक निःश्वास, काषायित, उष्ण-आलिंगन-कुंड, दंश, स्तब्ध, प्रौढ़-नारी, असप्त, अर्ध-निद्रावस्था, हतप्रभा, अस्थिपंजरावशेष, विदीर्ण, स्थित प्रज्ञ, कृतघ्न, प्रेमात्मा, जिज्ञासा, दुरुह, आर्द्र, तारतम्य, पथप, विलास-प्रसाद, अक्षासाम्भ, त्वरा, अमर्ष, एवमास्तु, अगम्य, अमाप्स, मंदित, शर्करार्पित, अकाव, वितृष्णा, निस्पृहता, अंसपृक्त, प्रच्छन्न, व्यवधान, दंभ, भर्त्सना, अमर्त, अनर्गल, शलभ आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है ।

मिश्र जी ने इन शब्दों का भाषा में किस प्रकार से प्रयोग किया जिससे उनकी भाषा अधिक उत्कृष्ट और सजीव लगती है । उनका उदाहरण इस प्रकार से है ।

उदाहरण -: 1) हरकिसन चौबे पड़ौसी की दीवार के सहारे उतरी हुई गुनगुनी धुप में बैठकर एक दस ग्यारह साल के बालक की अस्थिपंजरावशेष देह में तेल मालिश कर रहे थे । 102.

2) मैं भुवन और रेखा के उष्ण आलिंगन कुंड में गिरकर खौल रहा था और वेला की आंखों से शशि और शेखर नींद की चोरी करने पर उतारु थे । 103.

3) उसकी कल्पना जाल और भी दुरुह हो गया । उस कल्पना जाल में मैं उलझा-

उलझा स्वयं गिर पड़ता और ममता की भावनाओं को ठोकर मार देता । सारा रंग बिखेर कर घर को आर्द्र बना जाता । 104..

4) मैं उस रात ठीक से सो नहीं सका । अर्धनिद्रावस्था में सपना आता रहा एक मरे हुए फूल का । 105.

5) हीरोइनें प्रेम के लिये अपने बाप का किलात-प्रासाद छोड़कर कैसे हीरों के घर की सूखी रोटियां पसन्द करती है । 106.

6) हुन्नू तो थोड़ी मार खाते ही भाग गया किन्तु मुन्ना अमर्ष में आकर अपने में पिटवाता रहा । 107.

इन शब्दों का स्वाभाविक रूप से व्यवहारिक कर दिया गया है ।

ग्रामीण लोक भाषा के शब्दों का प्रयोग :

आंचलिक उपन्यासकार होने के कारण मिश्र जी की भाषा में ग्रामीण (तद्भव) शब्दों का बाहुल्य है ।

ढेला-ढेलौवन, अदुए, ई बुढ़वा का घुर घुर के देखता बा, कुर्की, सनयात, मिलकी, तिजहार, बतकही, ढूका, बावग, नताइत, अलंगि, धरोहर, पतिहई, गम्मज, हहहा उठना, तंच रहा, सुखरू, दरफार, दूह लिया, फिंयाई, कमासुत, कुपुत, पिड़िल, पोवर, थाती, अभगई, कतार, लंठ बानड़ा, अमुवाना, औरहन, पेहम, सिकहुतों, पलगी, पतिहुई, अक्खड़, आबदस्त लेना, व्यवहत करना, बतकही कउड़े, करताबी, हरफार, पिड़िल, अमुवाना, नादि ढंग, कोफ्त, दंगा, स्नावरी, पथराना, पेरोही, दिठोना, तोख-धोख, नाबदान, पर्दाफाश, आगंछ, झौंसार, फरोखत, किकोरना, पतन, चचरा, तंबल, धांधली, धैंधर, तल्खी, महमहा, निखालिस, खवाई, तादाद, ढूका, बावग, खेवाई, हरजुज, फुफुती, कोठ, भिड़ंत, थिगालियां, इज्जत, अंचार, धौथा, बेदर्दगी, ओसारे, पचड़ों, नहछोर, कुकल, पुश्तैनी डीह, करसवी, अक्खड़, खसाता, तिजहर आदि शब्दों का प्रयोग किया है ।

उदाहरण -: 1) जिंदगी भर क्या तुम अदुए ही रहोगे ? नांद पर बैल भरा जा रहा है और तुम बैठे बैठे मजाक कर रहे हो । 103.

2. प्रमोद को नौकरी हो गयी । इस शहर में ही अब रहना है और हर समय उससे टकरायेगा । 109.

3. इसी नारियंग को कराओ नाश्ता-पानी । मेरा क्या, मैं तो फालतू आदमी हूं । 110.

4. पिताजी खेवाई मांगते तो कोई कोई तो आसानी से दे देते लेकिन कुछ लोग बहुत हुज्जत करते । 111.

आंचलिक भाषा में प्रयुक्त ये शब्द कहीं कहीं तो भाषा को अत्यन्त मधुर बनाते है और कहीं कहीं मूल शब्द में अत्यधिक परिवर्तन के कारण अर्थ प्रेषण में कठिनाई उत्पन्न होती है ।

अंग्रेजी शब्द -:

मिश्र जी ने पात्रों के आधार पर शिक्षित व्यक्तियों द्वारा बोलचाल में अंग्रेजी शब्दो का भी प्रयोग कियाहै । जो इस प्रकार से है ।

टाइफाइड, सिगलड, गऊन, प्रोफेसर, साहब, फीस, डॉक्टर, स्टार्ट, हाई फीवर, क्वार्टर, डिग्री, आर्मचेयर, टेबुल क्लोथ, एम्बुलेंसकार, नॉयलान, टेरेलिन, प्रोनोट हेड कॉन्स्टेबल, पिकेटिंग, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, सोर्सफुल, कॉम्पटीशन, ऐकागनाइज्ड, वारनिंग, कावालिफायेड, बॉयकट, असेम्बली, ज्वाइन, अंडरवियर, प्लेजेंट, नान एडजस्टमेंट, ऐजुकेशनल, जनर लाइज्ड, फिनिशड, फेनेटिक, इंटेलेक्युअल, ब्रेन हेमरेज, इल्यूजन सटीन, एस्टिमेकेशन, इक्जैक्टली, इनक्रीमेंट, ड्यूटी, ऑफिस, हेड क्लर्क, ईश्योरेंस, ऑफिस, रिटायर्ड, प्रॉविडेंट फंड, मजिस्ट्रेट, टेम्परेचर, लेकचरर, चेयरमैन, वेकेन्सी, इन्टरव्यू, मेनटेन, सर्टिफिकेट, इण्टेलिजेण्ट, स्क्रिटर, कम्पाउण्ड, फ्रीमार्सिंग, इल्यूजन, इण्डियन कॉफी हाउस, मिनिस्टर शिप, रिमार्क, वाइस चांसलरशिप, हाइपर एसिडिटी, लाइब्रेरी, मार्डनिटी, पैरेण्टस, थर्मामीटर, मैकेनिक, पेमेंट, डोण्टवरी, स्पेशलकेयर, थीसिस केस, डाइथार्मी, हाइड्रो कार्टीजन, होलनाईट, डिसप्लिन, फार्मलिटीज, हीपोक्रेसी, टेम्परेरी, टैबलेट, पैट्रोमैक्स, फोनोग्राफ, एप्रोच, गवर्निंग बॉडी, एक्सपर्ट, ऐकडेमिक कैरियर, फिलास्फर, थ्रो आउट,

फर्स्ट क्लास, अप्लाई, कोडापायरिन, टेबलेट, मेच्यूरिटी, सेल्फ मैड मैन, हिपोक्रेट, इकॉनामिक्स, एकेडेमिक, इन्टरेस्ट, बॉडीगार्ड, हाउस-जॉब, ट्रीटमेंट, इन्चार्ज, रिफ्यूजी कैंप, एयर-फोर्स, इंड्यिन, एयर लाइंस, फोर्मलिटी, स्टोनडस्ट, सैलटैक्स ऑफिसर, वेरीफाई, डिसकनेक्ट, गेस्ट हाउस, कम्यूटर, कनफर्म आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

उदाहरण -: ।) मेरा इन्क्रीमेंट मेरी मौत के पैगाम का सा लगा । हां, यह आखिरी इन्क्रीमेंट है । ।।2.

यहां पर सरल हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी व उर्दू शब्द का सुन्दर समन्वय को प्रस्तुत कर भाषा का सौंदर्य बढ़ा दिया है ।

2) एक निरन्तर बेचैनी, एक अनवरत टैस्ट-लेस-नेस के पोयट - मोस्ट -मार्डन पोयट, वह एक निबन्ध लिखकर सिद्ध करेगा कि तुलसीदास मोस्ट मार्डन पोयट थे... हां, तुलसी की मार्डर्निटी उसकी मार्डर्निटी से कितना मेल खाती है । ।।3.

तद्भव शब्दों के साथ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भाषा के अनुसार को ध्यान में रख कर किया है । अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हुए है । उनका प्रयोजन दिखावे के लिये न करके स्वाभाविक रूप से हुए है ।

3) मैने क्या करना है मैडम, आई शुड नाट कम बैटवीन यू एण्ड हिम, प्लीज एलाउ मी टू गो । ।।4.

यहां पर शिक्षित वर्ग द्वारा सामान्य रूप से बोलचाल की भाषा में स्वाभाविक रूप से वर्णन मिलतका है ।

मुस्लिम शब्दों का प्रयोग :

मिश्र जी ग्रामीण परिवेश के निवासी होने के कारण उन्होंने ग्रामीण लोक भाषा का प्रयोग तो किया है । तथा साथ में इनके साथ मुस्लिम शब्दों का प्रयोग भी किया है क्योंकि इसके साहित्य में सभी प्रकार के मुसलमान पात्रों को भी लिया गया है । जिससे उनके द्वारा प्रयुक्त शब्दों का हिन्दी में समन्वय हो गया है । उसमें अरबी, फरसी के शब्द इस प्रकार से है ।

अरबी शब्द -:

तकरार, रहेन, दफना, गयस्सर, फिदा, इजहार, खिताब, मुतम्मात, इश्तहार, मुअत्तल, शागल, हिमाकत, शर, तन्वीह, फजीहत, इमदाद, खारिज, जज्व, तरजीह, मुरौव्वती, तफरीह, ताम्मोई, सोहबत, रुतबा, वाजिब, तुर्रा, तोहमत, इज्जदार, लफ्ज, हिफाजत, दरारत, माशूकाओं, हिमाकत, कफन, तजुर्बा, मातम, इश्क, मुवक्किल, मर्म ओहदे, खता, हिमाकत, मुताबिक, अहमक, शअर, तुर्रा, हजरत, खुराफती, मलीदा, मुस्तैद, ईजाद, स्तदा, हिफाजत, फारिग, रकीब, बेशिनाखत ।

फारसी शब्द :-

पोशाक, खानदान, फरमाते, तकाजा, आईना, बेवफा, पैगाम, कोफ्त, शिगूफा, खिदमतगरी, दहशत, तुर्रा, फेरबी, अफवाई, खिदमतगरी, जुम्बिश, शिकन, तल्खी, कारहंशा, फजिहत, अवदस्त लेना, खामियां, हंजित, दुर्रत ।

उदाहरण -: 1) कहिये, श्रीमान जी फिर कोई अब क्या शिगूफा लायेगें डॉक्टर साहब, अब रहा क्या ? वे तो मर गये । 115.

इसमें फारसी शब्द, अंग्रेजी शब्द तथा सामान्य हिन्दी का सम्मिश्रण करके भाषा के सौंदर्य में वृद्धि प्रदान की है । इसका प्रयोग में अलग सा थोपा हुआ न लगकर सामान्य रूप में प्रयुक्त है ।

2) ये सब सामने की कच्ची सड़क की धूल में लोटते रहते है या फारिग होते रहते है । 116.

यहां पर अरबी शब्द का सामान्य रूप से हिन्दी में मिश्रण हुआ है ।

3) आपने समाज को छाती ठोक कर दिखा दिया कि देखो, मेरा रुतबा इतना बड़ा है कि मेरे पागल लड़की की भी शादी हो गयी । 117.

यहां पर अरबी शब्द का प्रयोग हुआ है ।

4) लोगों ने जो इतना बड़ा विश्वास दे रखा है कि उसकी एक बात पर सारा मामला खारिज कर दिया गया । 118.

यहां पर भी अरबी शब्द का प्रयोग हुआ है ।

5. कितना बड़ा चुम्बक है इस राक्षस के खुले हुए मुंह का । कितना ही भोगो, वह खींचकर अपने में ही जज्ब कर लेता है । ।।9..

मुहावरों का प्रयोग -:

मुहावरे तथा लोकोक्तियां भाषा के जीवट की परिचायक होती है । जहां सरल भाषा काम नहीं कर सकती वहां इस प्रकार की लाक्षणिक भाषा कमाल कर दिखाती है । इस आधार पर काहानी में वार्तालापों अथवा वर्णनों में मुहावरों अथवा लोकोक्तियां का प्रयोग अपना प्रभाव डालता है । मुहावरे के प्रयोग से भाव के प्रकृतीकरण में ओजस्विता, लालयित और वाक्य गठन में लचक आ जाती है । मिश्र जी ने भी अपने उपन्यासों व कहानियों में मुहावरों का प्रयोग करके उसमें लाक्षणिकता प्रदान की है । उनके उदाहरण इस प्रकार है ।

1) माथा ठनक उठा ।
2) राह अगोरना ।
3) काठ मार जाना
4) बाट जोहना
5) पांव पसार कर लेटना
6) एक पंथ दो काज
7) जमकर काठ हो जाना
8) दाल-भात में मूसरचन्द
9) छाती पर सांप लेटना
10) जी मसोस कर रह जाना
11) दांत पीस कर रह जाना
12) जल-भुन कर रह जाना
13) आग बबूलाना
14) शेखी बघारना
15) आटे-दाल का भाव मालुम होना
16) ढिंढोरा पीटना

17) लोट-पोट हो जाना

18) जी उचक जाना

19) दूध की मक्खी होना

20) डांडी मारना

21) आठ-आठ आंसू रोना

2 22) जले पर नमक छिड़कना

23) रंग में भंग करना

24) आसमान पर चढ़ाना

25) गिरगिट की तरह रंग बदलना

26) दांत खट्टे करना

27) खून का घूंट पी जाना

28) भाड़ में झोंकना

29) छठी का दूध याद आना

30) मुंह में पानी भर आना

31) दाल में काला

32) अंक में भर लेना

33) कहर ढाना

उदाहरण -: 1) जब मेरा जूता टूटा तो असगुन की आशंका से मेरा माथा ठनक उठा लेकिन सोचा कि शायद उसका असर जूते से ही लड़ भिड़कर समाप्त हो जाये। 20.

यहां पर वाक्य का साधारण अर्थ न देकर उसको लाक्षणिक शब्द प्रयोग किया है ।

2) अगर मैं अपने रुपयों पर कुंडली मार कर न बैठूं तो ये सब मुझे जिन्दा ही मरी समझ बैठें । दूध की मक्खी की तरह घर से निकाल कर फेंक देंगे । 21.

3) बैजनाथ चमाइन के साथ पकड़े गये हैं तो यह बड़ा ही पेचीदा मामला है भाइयों । इसमें बड़े बड़े राज छुपे हैं । यह मछली सारे तालाब को गन्दा कर रही है । 22.

4) नीरू को अपनसोस हुआ कि मलिन्द खुद क्यों नहीं आया या अपने बाप को भेजा । उसे लगा कि मलिन्द उससे उस्तादी पढ़ रहा है । उसे भाड़ में झोंक कर खुद तमाशा देख रहा है । 123.

5) दिन-रात में दीनदयाल से बदला लेने की सोचता रहा और दांत पीस-पीस कर रह जाता रहा । अब मेरा खून उछल रहा है, अब मान का नहीं आ रहा है । 124.

6) यह कामरेड छोटी जातियों के मुहल्ले में बैठा हुआ क्या करता रहता है । मुझे तो कुछ दाल में काला नजर आता है । यह स्यमतिया भी उसके घर बहुत घुसबैठ किये हुए है । 125.

कहावतें

मुहावरों की तरह कहावतों का प्रयोग भी मिश्र जी ने लोक भाषा के रूप में किया है । जो इस प्रकार से है ।

1) घाट-घाट का पानी पिये हुए है ।

2) कौआ चला हंस की चाल ।

3) हाथी के खाने के दांत और है दिखाने के और । ऐसी रहती कातन हारी तो फिरती देह उधारी, ।

4) घड़ियाल के आंसू बहाते है ।

5) काम की न काज की नौ मन अनाज की ।

6) भगवान के घर देर है अंधेरे नहीं ।

7) देसी कउवा विलापती बोली आगे नाथ न पीछे पगहा ।

8) जैसे कान्ता घर रहे वैसे रहे विदेस ।

9) फिर ढाक के तीन पात ।

10) मान न मान मैं तेरा मेहमान ।

11) न ऊधो की लेनी न माधो की देनी, अपने काम से काम ।

12) सौ चूहा खाइ के बिलारि चले हज को ।

13) सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे ।

14) दूध का दूध पानी का पानी ।

15) यह मुंह और मसूर की दाल ।

16) जिस पत्तल में खाना है उसी में छेद करता है ।

17) गांव दही चूडा पर ऐसा टूटता है जैसे विष्ठा पर माछी ।

18) घर का जोगी जोगड़ा आन गांव का सिद्ध ।

19) भागते भूत की लंगोटी ही भली ।

20) न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी ।

21) कहिया पूत जनमलें कहिया झांकरि भइल, चला है मुझी से यह और गुनाह की बात करने ।

22) यह मछली सारे तालाब को गन्दा करती है ।

23) अन्धे-अंधा ठेलिया, दोउ कूप परंत ।

मिश्र जी ने आंचलिक भाषा की क्रियाओं को हिन्दी के व्यवहार में प्रयोग किया है । ये अंचल के ठेठपन और लोक जीवन के तत्वों को अभिव्यक्ति करने का प्रयास किया है। गंवई बोली के वाक्यों और लोकगीतों की पंक्तियों से आंचलिक रंग गहरा और लयात्मक बन गया है । उसका वह रूप सौंदर्य को यहां पर प्रस्तुत किया गयाहै ।

उदाहरण -: 1) मेरे मन में था कि दोनों अनाथ लड़कियों को सहारा दूंगी लेकिन लेने के देने पड़ गये, ये लड़कियां क्या हैं, आफत का पर काला हैं - काम की न काज की नौ मन अनाज की, अरे, तुम दोनों को मैंने दुरूस्त नहीं कर दिया तो मेरा नाम गौरी नहीं । 126.

यहां पर मुहावरा और कहावत का प्रयोग व्यंग्य के साथ निरूपित किया गया है ।

2) मैं क्यों चुप रहूं । शरम तो आपको आनी चाहिये कि एक बेगुनाह लड़के पर इस तरह अपने बेटे का गुनाह लाद रहे हे ।" नीरू कांप रहा था ।

"अच्छी रे छोकरे तेरी यह हिमाकत । कहिया पूत जनमलें कहिया झांकरि भइल । चला है मुझी से पद और गुनाह की बात करने । 127.

3) पहले यह बस्ती जिले में था, वहां इसने इतना घूस लिया कि नौकरी जाते-

जाते. बची, अब यह कड़ेपन का ओढ़ना ओढ़े हुए है । देखिये कब तक चलता है यह सब । यह तो बहुत ही बड़ा धूमम्बोर है । सो चूहा खाइ के बिलारि फेल हज को । 128.

4) लोग कहते है, बहुत बड़ा हाकिम आया है, न उधो की लेनी न माधों की देनी, अपने काम से काम । लोग तरह तरह की चर्चाएं करते थे कि उसने दीपदयाल को अपने यहां से गाली देकर निकाल दिया । 129.

5) देखो न, इस मास्टर की हिमाकत, मेरी लड़की से शादी करेगा, यह मुंह और मसूर की दाल मैंने यहां उसकी नौकरी लगायी, कमीना, जिस पत्तल में खाता है उसी में छेद करता है । हुंह, शादी करेंगे मेरी लड़की से । 130.

6) चाम वाला त चलि गइल, हम तुहें सुरती खिया सकेली । कहकर किसन लाल सुरती ठोकने लगा ।

"अच्छा लाओ, भाई, "भागते भूत की लंगोटी ही भली" 131

7) मतदान से नहीं, सर्व सम्मति से कोई निर्णय लीजिये, आप लोग, ताकि हर आदमी उस निर्णय में अपने को शरीक समझे । तो न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी, कहकर सहन तैश में आ गये । 132.

आंचलिक भाषा में अपना निज का प्रवाह होता है । जिसमें अंचल की मिट्टी की अनगढ़ सुवास भी महकती है । लोक गीतो व लोक कथाओं की भांति लोक भाषा की यह निजता भाषा का जो प्रारूप प्रस्तुत करते है । वह सामान्य पाठक के लिये आकर्षण का विषय भी बनता है ।

शिल्प शैली

मिश्र जी ने शैली के वैविध्य रूप का वर्णन करके कौशल हासिल किया है । इन्होंने पूर्व दीप्ति, स्वप्न, चित्र, व्यंग्य आदि का उपयोग सीमित है । फिर भी रूप बन्ध में पर्याप्त विविधता लिये हुए है । मिश्र जी की अधिकतर कहानियां लेखकीय सर्वज्ञता के शिल्प में प्रस्तुत की गयी है । इसलिये इसमें अपनी ओर से घटाने और जोड़ने के अवसर कम मिलते है । प्रत्येक लेखक अपनी साहित्यगत वस्तु को अपने ढंग

से व्यक्त करता है । इसके लिये समग्र साहित्य की शैली एक सी न होकर प्रत्युत्त प्रत्येक लेखक की शैली भिन्न होती है । शैली की यह भिन्नता, शब्द, संकलन, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों में शब्दों का स्थान, क्रिया पदों का चुनाव, वाक्यों अथवा शब्दों की ध्वनि तथा समुच्च अर्थात वाक्य में किस बात पर लेखक विशेष काल देना चाहता है, आदि कई बातों को लेकर होती है । 133.

<u>डायरी शैली</u> :- इनके डायरी शैली के उदाहरण एक कहानी व उपन्यास में है ।

<u>उदाहरण</u> : तुम्हारी मानवीयता-तुम्हारा स्नेह मुझे भारी पड़ रहा है सुभाष, लगता है तुम मुझे छोटा बना रहे हो । मेरे प्रति तुम्हारा प्यार और सद्भाव ज्यो-ज्यों गहराता जा रहा है । मैं हीन भावना से ग्रस्त होती जा रही हूं । तुम्हारे जैसे खानदानी आदमी के लिये क्या मैं ही कलंकिनी मिली थी । तुम्हारे एक एक इशारे पर अच्छी से अच्छी खानदानीलड़की मिल सकती थी । लेकिन तुमने मेरे लिये न जाने क्यों इतना त्याग किया । कभी कुछ बताते भी तो नहीं हो, केवल मुझे चारों ओर से समेट लेना चाहते हो, मैं तुम्हें क्या दे सकती हूं । सुभाष: कम से कम मेरी कहानी तो सुन ली होती, मुझे लगता है कि तुम मेरी कहानी सुनकर शायद मुझे इतना प्यार नहीं करते, घृणा भी करते, कुछ ताने कसते, कभी डांटते-फटकारते तो मैं इतना भार महसूस नहीं करती । मुझे कभी कभी लगता है कि तुम मुझ पर एहसान किये जा रहे हो । 134.

कभी कभी व्यक्ति इस स्थिति में होता है कि वह अपनी बात खुलकर कह नहीं पाता, लेकिन वह अपने विचारों को क्रेन्द्रित रखता है । ऐसे में डायरी सबसे सर्वोत्तम है जिसमें व्यक्ति खुलकर अपने विचारों को प्रस्तुत कर सकता है । उक्त वाक्य में सुषमा इसी स्थिति से गुजरते समय डायरी में अपनी वास्तविकता लिखती रहती है ।

2) आज मुझे क्या हो गया है । जैसे वर्षों की सोयी हुई एक प्यास पथरीली धरती फोड़कर निकल आये जल की तरह ऊपर छलछला आयी है । मेरा भीतर बाहर जैसे पुरवा हवा के नाम झोंके से हल्का हल्का गीला हो गया है । जैसे-जन्म-जन्मांतर से मेरे पीछे छोड़ती हुई एक अतृप्ति मेरा नाम ले-लेकर मुझे पुकारती रही है और मैं उसे सुन-सुनकर भी अनसुनी करता हूं । आज क्यों मैं खड़ा हो गया

और अतृप्ती हांफती हांफती मेरे पास आकर रूक गयी है और अपने कोमल स्पर्श में मुझे कसती जा रही है । क्यों आज मेरे लिये इन गरजते-बरसते बादलों और भीगते हुए परिवेश का अर्थ बदल गया है । कौन है ? कौन है ? कौन है वह, जो यह सब कुछ कर रहा है ? माधवी तुम तो नहीं ?" 135.

प्रस्तुत पंक्तियां उमेश जो एक मार्क्सवादी है । उसने अपनी डायरी में लिखी है । वह एक लड़की माधवी को भीतर से चाहता है लेकिन मार्कसवादी दृष्टिकोण रखने के कारण बाहर से उसका उल्लेख मात्र भी नहीं करता है । लेकिन उसकी भीतर आवाज डायरी के पन्नों पर स्वंय स्पष्ट झलकती है ।

मिश्र जी ने अपने कथा साहित्य में इस शैली का प्रयोग भी बखूबी ढंग से किया है ।

<u>पत्र शैली</u> -:

पत्र शैली के भी उदाहरण बहुत कम ही मिलते है ।

मान्यवर तिवारी जी,

आपका कृपा पत्र मिला, बहुत-बहुत आभारी हूं । आपने मेरे लिये जो इतने अच्छे अच्छे शब्दों का प्रयोग किया है उसके लिये किस प्रकार आपका ऋण चुकाउं यह सही है कि मैं गरीब हूं लेकिन मेरी आंख का पानी नहीं गिरा है जबकि बहुत से पैसे वालों की गैरत दो-दो पैसों में बिकती रहती है । वे स्वार्थ के लिये कमीने से कमीने आदमी की चापलूसी करते है । गरीब से गरीब आदमी की जमीन-जायदाद हड़पने में वे नीच से नीच तरीके अपनाते है । शरीफ बने रहकर गुंडो से चोरियां करवाते है, जाने मरवाते है, खेत लुटवाते पिटवाते है । कामवासना तृप्त करने के लिये दूसरों का घंर उजाड़ देते है । और बहुत से काम करते है । मेरा गरीब होना और मास्टर होना मेरे लिये गोख की बात है तिवारी जी, मैने आप लोगों के स्कूल हेड्मास्टरी की । इसके लिये मैं किसी का एहसान नहीं लेना चाहता । 136.

कई बार ऐसा होता है जब व्यक्ति सम्मुख रूप से कोई बात करते हुए हिचकिचाता है । लेकिन पत्र के माध्यम से वह अपनी बात को पेश कर सकता है ।

गांव में जमींदारों के डर कोई स्पष्ट रूप से बात नहीं कर सकता है । यहां तक शिक्षित मास्टर होने के बावजूद भी वह उसका विरोध नहीं कर सकते । इसको इस प्रकार से पत्र लिखकर सूचित करते हैं ।

इसके अलावा आखिरी चिट्ठी में भी पत्र शैली का उल्लेख मिलता है ।

भावात्मक शैली :

मिश्र जी ने संवेदनशील पात्रों के अनुरूप उनके विविध भावों का प्रदर्शन करने की शैली में बखूबी निभायी है । पात्रों की भावनाएं देखकर उसमें कहीं-कहीं भावुकता भी आ गयी है । इसके उदाहरण इस प्रकार है ।

1) पति विदेश जा रहा है - यह भरा-भरा सा मौसम, चारों ओर लहराते खेत, यह मस्त पवन, कजली का प्यारा गीत- लेकिन इन सबके बीच तैरता हुआ मन का दर्द, विदेश यात्रा का दर्द - अभाव का दर्द, इस ज्वार की पूरी जिन्दगी की यही सच्चाई है । अभी लहराते खेत है, कल बाढ़ का पानी... 137.

यहां पर गांव की स्थिति को बताते हुए उनके उस समय के भावुक क्षणों को बताया गया है । किस प्रकार नारियां उस परिस्थिति का सामना करती है । उनके मन में किस प्रकार का दर्द है । उनकी स्थिति का वर्णन यहां मिलता है ।

इस प्रसंग में शारदा की मन: स्थिति, आंतरिक उलझाव, रोमांटिक अहसास आदि का वर्णन मिलता है । उसकी स्थिति की मानसिकता भी प्राकृतिक परिवेश जैसे ही है ।

2) वह (शारदा) ज्यों यह अनुभव करती है कि बरसात के सारे बादल उनके भीतर ही गरज रहे है । शरद के सारे फूल उसी के भीतर महक रहे है और अगहन पूस में यहां से वहां तक फैली हुई पीली पीली सरसों उसी के भीतर झूम रही है। 138.

3) नीरू ने खाना खाते समय जब कपड़ा निकाला तो मां स्तब्ध रह गयी । हड्डियां निकल आयी थी, नसें उभर गयी थी । मां ने एक बार इफ्ते भर की तनख्वाह का हिसाब लगाया, फिर नीरू की हड्डियों को गिना । कुछ कह नहीं पा पा रही थी ।

नीरू तुम्हें कितनी तनख्वाह मिलती है, मां का स्वर था ।

"आठ आने रोज, मां ।"

"तीन रुपये तो तुमने घर पर दे दिये । आठ आने में एक हफ्ता कैसे काम चला होगा । गीले स्वर में मां ने पूछा । " चल जाता है मां, चल जाता है । तुम काहे को चिन्ता करती हो, मिल में सामान सस्ते मिल जाते है ।

मां ने नंगी वास्तविकता के अधिक अनावृत होने के भय से बात अधिक नहीं बढ़ायी । नीरू खा-पीकर लेट गया । मां उसकी हड्डियों को देखती रह गयी । 139,

यहां पर भावाभिव्यक्ति के साथ नाटकीयता की शैली का गुण भी मिलता है । मां की ममता व वात्सल्य जनित चिन्ता भावों के माध्यम से प्रकट होती है। वास्तविकता जानने के बाद उसकी स्थिति की भावुकता को प्रदर्शित किया है ।

भावव्यंजना शैली : 1§ लोग लहलहाते खेतों की फसलें उखाड़-उखाड़कर अपने बेटे के शव की तरह कंधे पर लाद-लादकर घर ला रहे है । 140.

इसमें गांव के लोगों की सारी उम्मीदें व आस्था इन फसलों पर ही आधरित थी । क्योंकि कृषकों के लिये खेती ही उनका सबसे बड़ा अमूल्य रत्न होता है । जिसकी वह जी-जान से देखभाल करते है । यहां पर खेतों की फसलों के प्रति उनकी भावनाएं पता चलती हैं ।

2§ पंकज को लगा कि वह अपराधी है, क्योंकि इस नगर को चुना उसने । वह मन ही मन हंसा- हां, जैसे चुनना न चुनना उसके हाथ में ही तो था । वही नगर कौन सा अपना था । वहां भी तो वही चक्कर चला था । चक्कर में फंसा, जैसे वह एक दलदल में फंस गया था, -- चारों ओर से एक खामोश ठहराव ने ग्रस लिया था. ठहराव- नहीं --- ठहराव उसे स्वीकार नहीं है, वह तो उसे निगल ही लेगा । उसका कभी घर था ही नहीं, वह तो हमेशा चलने के लिये छोड़ दिया गया है । 141.

यहां व्यक्ति की मनः स्थिति को बताया गया है । व्यक्ति जब एक शहर को छोड़ कर जब दूसरे शहर में आता है । तो उसके लिये वह परिवेश बिल्कुल नया व अनजान होता है । उसी परिस्थिति की उलझन में वह कुछ सोच नहीं सकता ।

आक्रोश की अभिव्यंजना -:

मिश्र जी ने पात्रों के माध्यम से आक्रोश भावना को प्रस्तुत कियाहै । जो समाज में होने वाले कृत्यों की ओर अंगित किया गया है ।

डॉक्टर, -- डॉक्टर -- डॉक्टर -- दिनेश मनुष्यता का कलंक, पिशाच, नरक

का बीड़ा । मैंने इसे क्यों नहीं पहचाना । मैं मजिस्ट्रेट हूं, अपराधियों को दंडित करता हूं और इतने बड़े अपराधी वृत्ति के आदमी को मैं नहीं पहचान सका । पहचानना तो दूर, इस कसाई के हाथ मैंने देवी सी बेटी को कत्ल होने को सौंप दिया । अपराध तो मेरा है, तेरा है राकेश, तूने खून किया है अपनी बेटी का, तूने इसे सौंपा है कसाई के हाथ । तू सबको सजा देता है बोल, मेरी सजा क्या है । और क्या सजा दिलाता है इस नराधम दिनेश को । 142.

जब कुछ ऐसे हादसे हो जाते है जिससे मनुष्य का मन खिन्न हो जाता है । वह उसके लिये अपने आप को जिम्मेदार समझते है । उनका विवेक उनको उपेक्षित समझता है । प्रस्तुत प्रसंग में इसी खिन्नता को यहां व्यक्त किया है ।

आत्म-अभिव्यंजक शैली -:

खामोश, बदतमीज । तुम जानती नहीं हो कि मैं दहेज का विरोधी हूं । मैंने स्वयं अपनी शादी में बड़े-बड़े दहेज की अपेक्षा कर एक ऐसी लड़की से शादी की है जो बस अच्छी लड़की है और प्रतिष्ठा । तुम यह भी जानती हो कि मैं झुठी प्रतिष्ठा के विरुद्ध हूं । किसी बैसाखी पर मेरी प्रतिष्ठा नहीं चलती । मैं स्वयं अपनी प्रतिष्ठा की सुरक्षा कर सकता हूं । जानती हो मैं एक प्रतिष्ठित लेखक हूं । मेरे नाटक हर जगह खेले जाते है । मेरी लेखनी में मेरी आत्मा के विद्रोह की आंच उभरती है । 143.

प्रस्तुत अवतरण में आत्म शैली का प्रयोग हुआ है जो स्वंय उपेक्षा पूर्ण जीवन जीना पसन्द नहीं करते । वे उसका खुलकर विरोध करते है । इसी आत्माचिंतन को बताया गया है ।

आत्म-विश्लेषण -:

वे कब टूटी, कब आक्रोश उछला और कब हाथ को जुम्बिश देकर डॉक्टर के गाल से चिपक गयी । उसे इसका पता नहीं चला । लेकिन जब पता चला तो स्वंय हतप्रभ रह गयी किन्तु हतप्रभ होने के क्षण से उबरते ही उसे लगा कि चलो यह भी अच्छा हुआ । यही काम उसने पहले क्यों नहीं किया ? पहले किया होता तो शायद उसे इस तरह परित्यक्त होने की नौबत ही नहीं आती । रोषमय प्रतिकार से कभी कभी अन्याय का फन नत हो जाता है । डॉ0 उसका पति था, उसका

पतीत्व पाने का उसे पूरा अधिकार था, वह भिखारियाँ नहीं थी, प्रेम और स्वत्व की स्वामिनी थी । उसने क्यों कहा यह तब नहीं कहती, तो क्या वह आज परित्यक्ता होती । 144.

मिश्र जी ने अपने पात्रों के माध्यम से आत्मपीड़क भाषा का प्रयोग किया है। प्रस्तुत प्रसंग में ऋतु पीड़ित होने पर प्रतिकार करती है । उनकी इसी मानसिक वेदना को यहां बताया गया है । उसका आत्म चिंतन मन उद्विग्न हो उठता है ।

ध्वनि शैली -:

जिन प्रसंगों में ध्वनि की गूंज उच्चरित होती है उसे ध्वनि शैली कहते है मिश्र जी के कथा-साहित्य में यत्र तत्र इसका प्रयोग मिलता है ।

1) किलो-किलो-किलो हो-- किलो हो - मचानो पर बैठे लड़के-लड़कियों किलकटी औरकोवे उड़ा रहे है और उनकी आवाजें दूर दिशाओं तक तैर जाती है- किलो हो -- किलो -- दलसिंगार अपनी मचान पर सोया हुआ था कलवा के साथ । चटाक -- चटाक -- चटाक कौन है हो । डरते डरते दलसिंगार ने आवाज दी । एक खामोशी सी छा गयी --

दलसिंगार ने सोचा कोई जानवर रहा होगा -- हवा का एक भीगा झोंका आया और दलसिंगार से लिपट गया । चटाक - -- चटाक -- चटाक। 145.

गांव में इस प्रकार की ध्वनियां उच्चरित होती है । मिश्र जीने वातावरण के आधार पर इन ध्वनियों को शाब्दिक चित्रण किया है ।

2) भट -- भट -- भट -- भट --

और पुक - पुक - पुक - पुक करती पड़ोसी गांवों में आटे की चक्कियां चल रही थी । डिम - डिम - डिम - डिम नगाड़ा बज रहा है । भट - भट - भट - भट मोटर चीख रही थी । मशीन चीखती रही - डिम -- डिम - डिम - डिम बजता हुआ नगाड़ा दूर होता जा रहा था । 146.

3) त्रिवेणी एक्सप्रेस धड़ - धड़ - धड़ - धड़ -धड़क - धड़- धड़ भागी जा रही है । ढुक - ढुक - ढुक - ढुक - सीं ई ई ई गाड़ी ने फिर लाइन बदली । 147.

4) धड़-धड़ धड़ाम - धड़ - धड़ धड़ाम ---

कितना सन्नाटा है और उस सन्नाटे में यह शोर। घाघरा नदी का पुल है - धड़ --- धड़ --- धड़ाम -- धड़ --- धड़ धड़ाम --- घाघरा का पाट दूर-दूर तक फैला हुआ है और जल धारा बीच में बह रही है। 148.

इन सभी प्रसंगो में ध्वनि चित्र शैली का प्रयोग बखूबी से किया गया है। जो चेतन वस्तु को भी सार्थकता प्रदान करती है जो एक लय के साथ गति की तरह चलती जाती है।

व्यंग्य शैली -:

सेठ जी, इस भिखारी के बच्चे को रहने के लिये इस समाजवादी देश में कहीं जगह नहीं है। यह सड़क पर नहीं घूमेगा तो कहां जायेगा। आप इसके लिये एक मकान बनवा दीजिये और सिपाही जी, आप इसे एक दुकान खुलवा दीजिये, फिर देखिये, यह कहीं नहीं जायेगा, आप ही इसके यहां आइयेगा।" फिर लोग हंसे।

सिपाही ने अपना अपमान अनुभव कर रहा था, "आप लोग कौन है। किसने कहा कि आप पुलिस के मामले में हस्तक्षेप करें।" "हम उसी समाजवादी देश के नागरिक है सरकार, जिसके आप सिपाही है और उसी देश का यह भिखारी है जिस देश के ये तोंद वाले सेठ जी है, पवन ने कहा। 149

इस प्रसंग में व्यंग्य के साथ आदर्शवाद को भी प्रस्तुत किया गया है। समाजवादी देश में सबके लिये समान रूप से व्यवस्था होनी चाहिये। सबका समान रूप से व्यवहार भी होना चाहिये। छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं होना चाहिये।

2) अरे भाई, नारी तो अमृत है ही, वह चाहे कहाइन हो, चाहे ब्राहमाणी, कवियों ने नारी को अपने भीतर की सारी सुन्दरता के साथ गढ़ा है। ब्रहमा ने तो गढ़ा ही है और ऐसा लगता है कि जीवन की सारी यात्रा को मुल में नारी के अमृत की खोज ही है, उसी के लिये समस्तब्राहमांड गतिशील है। स्वंय ब्रहमा इसके बिना अपने को अकेला अनुभव करता है। नारी तो नारी है। वह कोई जाति नहीं है। इसी तीर्थ में होकर पुरूष पवित्र होता है और दीन दयाल जी, इस तीर्थ का लाभ आपसे अधिक किसने लिया होगा। आप तो स्वंय ब्रहमा है जो सभी

जगह रमते हैं । 150.

इस प्रसंग में अमरेश जी ने साहित्यक शैली में दीनदयाल पर करारी चोट की है है । ऐसी चोट जो देखने में भोली-भाली भी लगे, पर धंस जाये आर-पार ।

प्रतीकात्मक शैली -:

ऋतुको लगा कि वह गाड़ी से एकाकार हो गयी है । लेकिन नहीं, गाड़ी तो लाइन बदल रही है । वह तो लइन छोड़ चुकी है । गाड़ी की लइनें एक दूसरे से जुड़ी है और हर लाइन गाड़ी को गति दे रही है किन्तु वह तो एक लाइन छोड़कर उस अंधेरे जंगल में भटकने के लिये छोड़ दी गयी है । जिसमें छोटी मोटी पगडंडियां भी नहीं है । 157.

इस प्रसंग में ऋतु रेल में बैठकर यात्रा करती है । ऋतु की जीवन व्यथा रेलगाड़ी की गति से एकाकार हो गयी है । गाड़ी का लइन बदलना ऋतु की जीवन गति के परिवर्तन का प्रतीक है और गाड़ी के पटरी बदलने पर चीखती सीटी ऋतु की पीड़ा भरी चीत्कार है । यह चीख और स्टेशन का छूटना प्रतीकात्मक रूप से ऋतु के अंतकरण में चलती यातना प्रक्रिया के बीच एक नई सम्भावना के नष्ट हो जाने की व्यंजना करते है ।

2) मैं भी तो एक पुल ही थी डॉक्टर, जो ऊपर टंगी हुई तुम्हारे और पिताजी के परिवार को मिला रही थी और मेरे अन्तर में से वेदना की कितनी ही जल-धाराएं प्रवाहित हो रही थी । मेरे अन्तर की जलधारा को कौन देखता था । और मैं तो समय की गाड़ी का दबाव झेलती हुई शोर भी नही कर सकती थी- पुल के विपरीत एक दम मौन थी । 152.

यहां पर ऋतु ने अपने जीवन का प्रतीक पुल के साथ बांधा है । इसमें ऋतु के भीतर की दबी आन्तरिक वेदना की झलक मिलती है । जो न तो रो सकती है और न हंस सकती है । सब कुछ सहन करती जाती है । मिश्र जी प्रतीक शैली का ऐसे मार्मिक प्रसंगों मे प्रयोग करके कौशल हासिल किया है । वे जीवन को प्रतीक के रूप में देखने की एक अलग ही शैली अपनाते है । अलग अलग दृष्टिकोणों से इसको प्रस्तुत करने में कामयाबी हासिल करते है ।

संकेत शैली :

कुछ बातें इस प्रकार की होती है । उनको बोलकर न करके बल्कि संकेत मात्र से प्रसंगित कर दिया जाता है । मिश्र जी ने संकेत शैली का प्रयोग भी अपने कथा-साहित्य में किया है ।

उदाहरण : नहीं, उसने हत्या नहीं की है वे पुराने कगार थे और वह भरी हुई बरसाती नदी । भरी हुई नदी को क्या किसी के कहने पर चलना पड़ता है । उसमें भरता हुआ जल स्वंय नदी को गहराई और बेरोक गति दे देता है । पानी से भरी हुई नदी क्या खुद भी अपने को रोक सकती है ? वह भी भरी हुई नदी ही तो थी, क्या अपने को रोक पाती । पंडित जी ने पुराने कगार की तरह रोकने की कोशिश की, लेकिन वे खुद ही टुटकर गिर पड़े और न जाने कितने लोग उसकी धारा में आये गये, आये गये, कितनों को उसने अपनी गहराई में डुबोकर शांत किया लेकिन खुद बेचेन और अशांत होकर लगातार बहती रही, बहती रही और न जाने कब तक यह सिलसिला चलता रहा । 159

यहां पर कलावती की जवानी का संकेत नदी से किया गया है । नदी के बहाव से उसका प्रतिक को प्रस्तुत किया गया है । कलावती नदी को संकेत बनाकर कलावती के व्यवहार के बारे में बताया है ।

बिम्ब शैली :

यह शहर की दुर्गन्ध शाला है । दूर दूर तक एक खाली मैदान में सैंकड़ों जानवरों के नये-पुराने मुर्दे पेड़ है, उनके कंकाल, उनकी टुटी-फुटी हड्डियां बिखरी हुई है । ट्रंकों में लद-लदकर शहर का कूड़ा आता है और हवा के ऊपर अपनी सीलन भीरी दुर्गन्ध लादकर मीलों बिखरे देता है । जगह - जगह गन्दें गड्ढों में कोई-भरा पानी जमा है जिसके किनारे किनारे अनेक लोग नंगे बैठे हुए है ।

बड़े-बड़े गिद्ध पंख फड़काते हें, मुर्दे को खींचते है, नोंचते है औरपंख फैला-फैला कर लड़ते हे फिर चुप होकर बैठ जाते है किसी नये मुर्दे की तलाश में । 160.

यहां पर मिश्र जी ने बहुत ही सटीक व यथार्थ जीवन के बिम्ब को प्रयोग किया है । जो एकदम सजीव सा प्रतीत होता है ।

नाटकीयता शैली :

लगान देने के लिये किसान पकड़ लाया गया । किसान गिड़-गिड़ाया, मालिक, अभी पैसे नहीं है, कुछ दिनों की मोहलत दी जाये ।

लगाओ सूअरों को चार लात, नीरू ने तड़पकर कहा ।

दूसरा किसान, गिड़-गिड़ाया, मालिक लगान तो लाया हूं, लेकिन कुछ कम है कुछ छुट दी जाये ।

तेरे बाप ने जमा कर रखा है पैसा, पाई-पाई चुका, नहीं तो खाल खिंचवा लूंगा, एक सिपाही एक किसान को पकड़ लाया "मालिक यह बेईमान खेत में ईख तोड़ रहा था ।"

"भूख लगी थी बबुआ । खाने के लिये एक ईख तोड़ ली मालिक, इस पर इस सिपाही बाबू ने बहुत पीटा और यहां भी पकड़ लाये । 160.

वैसे मिश्र जी ने नाटकीय शैली का प्रयोग कम मिलता है । फिर भी जहां कहीं पर इस शैली का प्रयोग किया है । उसमें कुशलता भी प्राप्त की है । प्रस्तुत प्रसंग में इस शैली का उदाहरण है ।

अभिनयात्मक शैली :

मिश्र जी ने संवाद शैली में पात्रों के अनुसार उनकी लोक भाषा में इस शैली का प्रयोग किया है ।

"अरे खड़े काहे को हो । जात काहे नहीं हो । "काहे के जाई, नहीं जाव, ई कालेज क बगीचा है, ।

कौनो तुहार बगीचा है । अपने ओर का आदमी हो के तू ऐसन व्यवहार करत हवा । हमार मामुली कपड़ा-लता देखने तू बूझत हवा हम चोर हई । तब तूहं चोर भइलह । तुहार कपड़ा लता व अउरों बराब बा । "आरे तू तो आपन बोली बोलत हवह हो । कहां क रेहे वाला हवह ?"

"गोरखपुर क ?

"गोरखपुर क । अरे, ओदी क त हमहूं हई, हां, हवह त ऐ न ऐसन व्यवहार करते हवह हम एम ए पास हई ।" इवां नौकरी खोजे आइल बाटी । अपने इहां कहां नौकरी बा । एम० ए० पढ़ले के बाद भी आदमी नौकरी खातिर ठोकर खात

फिरेला । जब नाही मिले त आदमी घर दुआर छोड़िके परदेस में दिन काटें ला । 161.

यहां पर गोरखपुरी भाषा का वर्णन मिलता है । शिक्षित होने के बाद भी नौकरी न मिलने पर घर-द्वार छोड़ना पड़ता है । तथा बेइज्जत भी होना पड़ता है । पात्र की इसी मनो भुमि को मिश्र जी ने यहां पर उभारा है ।

गतिशील चरित्र योजना :

चलती-फिरती काली-काली फटी-फटी छायाओं से अनेक लोग, गन्दे-गन्दे फटे पायजामें या मात्र लंगोट- गन्दी, फटी और किसी की उतारी हुई बेडोल बुशर्ट या कुर्ते या नंगे शरीर, सिर से पांव तक बहती हुई मैल की लकीरें पीठ पर झूलते हुए पुराने बोरे, आंखों में जमी हुई सीलन....

एक फटा कच्छा और किसी का उतारा हुआ झोलदार कुरता पहने भौला मार खाये कुते का सबसे अलग टूटे-फुटे कुड़े बटोरने लगा । 162.

प्रस्तुत प्रसंग में भाषा सजीव रूप से गति प्रदान करती हुई चलती है । इस अवतरण को पढ़ने मात्र से ही यथार्थ चित्र आंखों के सामने उभर आता है । लेखक ने शब्दों के माध्यम से इसमें सजीवता प्रदान की है ।

पूर्व दीप्ति शैली :

मिश्र जी अपने दो उपन्यासों "रात का सफर" व "आकाश की छत" में पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग किया है । इसके अतिरिक्त इनकी कहानियों में इस शैली का प्रयोग बखूबी मिलता है । पूर्व दीप्ति शैली में अतीत की घटना को स्मरण के रूप में लिया गया है । डा० मिश्र ने इस शिल्प को प्रभाव शाली बनाने के लिये अनेक प्रयोगों का प्रयोग किया है ।

उदाहरण : ।ऽ राधा एक सुगंध -- राधा और एक दिन इसका गहरा अनुभव करता है । फिर अनेक वार राधा की स्मृति आती है ।

"राधा -- राधा -- राधा ! । राधा की याद आते ही उसके भीतर एक पवित्र धारा बहने लगती है और शराब का सारा गंदा वातावरण धुल जाता है । "

राधा -- राधा -- राघुनाथ -- नौकरी, -- गुंडे -- अपमान और राधा -- राधा । 163..

इसमें राधा शब्द की आवृत्ति बार बार होती है जो अतीत की स्मृतियों के आधार पर कथा को आगे ले जाती है ।

2) छपाक: बदरी भैया । — वह चिल्ला उठा और घाट पर से उठ बैठा वह पसीने से लथपथ हो उठा और हांफने लगा, आँख खोलकर देखा, उजास फूट रहा है । "छपाक" की आवाज कहाँ से आयी है । शायद किसी ने पत्थर फेंका हो, शायद कोई जानवर पानी में उछला हो, शायद किसी ने छत पर से कूड़ा फेंका हो।

"छपाक । फिर वह चौंका । पानी में होने वाला यह शब्द उसे एकदम चौंका देता है । वह डर से कांपने लगता है और आंखों में बदरी भैया उभर आते है । 165.

"छपाक" वह कांप उठता है । शायद फिर किसी लड़के ने पानी में पत्थर फेंका था छपाक, छपाक । ओह बदरी भैया, वह चीख उठा ।

"छप" फिर कुछ पानी में गिरा और वह फिर कांप गया और फिर अतीत की ओर लौट गया । 166.

इसी प्रकार "छपाक" शब्द के द्वारा भी पूर्व दीप्ति शैली को दर्शाया गया है । दिल्ली की बाढ़ में होने वाली "छपाक" यश के मन में किसी दूसरी "छपाक" के बार बार संकेतिक उत्तेजित कर देती है । वर्तमान छपाक और अतीत की कथा में बदरी भैया के द्वारा लगाया गयी "छपाक" दोनों किसी बिन्दु पर एक होकर यश को सिहरा देते है । यहाँ पर गाँव व शहर, अतीत और वर्तमान एकमेक होकर उपस्थित होते है । सुई - ई - ई - ई -ई चीखती हुई गाड़ी भागी जा रही है- झक-झक, झुक- झुक झ झ झ झ - हड़्पुट, हड़्पुट ....167.

"रात का सफर" उप0 में गाड़ी की गति के साथ-साथ ऋतु के जीवन की गति को पूर्व दीप्ति शैली में बताया गया है । उप0 में आरम्भ में गाड़ी चलती जाती है । इसके साथ - साथ ऋतु को अपने जीवन की घटनाएं याद आती है । कि उसका जीवन भी पटरी के साथ साथ बदलता नहीं है । पूरे उप0 में गाड़ी की गति के साथ ऋतु के जीवन की घटनाओं का वर्णन किया गया है । वह अपने जीवन को गाड़ी का प्रतीक मानकर चलती है । लेकिन उसके अनुसार अपना निर्णय नहीं दे सकती है । घटनाओं के सोच-विचार का अंत भी गाड़ी में उप0 के साथ ही होता है ।

इस प्रकार मिश्र जी ने विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग करके अपने हस्त कौशल को बढ़ाया है । शैली के विभिन्न उदाहरणों को प्रस्तुत किया है ।

संदर्भ सूची

01) डर कहानी — पृ0 – 12, 15
03) रोटी कहानी — पृ0 – 22
04) अमृतलाल नागर के उपन्यास — पृ0 – 91
05) आज का हिन्दी साहित्य संवेदना और दृष्टि — पृ0 – 23, 14
07) जल टूटता हुआ उपन्यास — पृ0 – 29
08) अपने लोग उपन्यास — पृ0 – 42
09) पानी के प्राचीर उपन्यास — पृ0 279
10) अपने लोग उपन्यास — पृ0 – 43
11) पानी के प्राचीर उपन्यास — पृ0 – 226
12) मुर्दा मैदान कहानी — पृ0 – 356
13) अपने लोग उपन्यास — पृ0 – 248
14) अतीत का बिम्ब कहानी — पृ0 – 401, 401
16) अकेली वह कहानी — पृ0 – 28
17) अपने लिये कहानी — पृ0 – 43
18) जल टूटता हुआ उपन्यास — पृ0 – 566, 523
20) पड़ोसिन कहानी — पृ0 – 46
21) सूखता हुआ तालाब उपन्यास — पृ0 – 104
22) पिता कहानी — पृ0 – 136
23) बादलों भरा एक दिन कहानी — पृ0 – 153
24) कुत्ते कहानी — पृ0 – 109
25) अपने लोग उपन्यास — पृ0 – 135, 223
27) जल टूटता हुआ उपन्यास — पृ0 – 452
28) अपने लोग उपन्यास — पृ0 – 336
29) दूसरा घर उपन्यास — पृ0 – 154
30) बिना दरवाजे का मकान उपन्यास — पृ0 – 56
31) आकाश की छत उपन्यास — पृ0 – 19
32) अपने लोग उपन्यास — पृ0 – 246
33) आदिम राग उपन्यास — पृ0 – 50

34)	जल टुटता हुआ उपन्यास	पृ0 – 240
35)	आंचलिक उपन्यास – संवेदना और शिल्प	पृ0 – 35
36)	जल टुटता हुआ उपन्यास	पृ0 – 455
37)	खंडहर की आवाज कहानी	पृ0 – 227
38)	एक इन्टरव्यू उर्फ कहानी तीन शुतुरगुर्गों की क.	पृ0 – 124
39)	गपशप कहानी	पृ0 – 366
40)	पानी क.	पृ0 – 499
41)	बसंत का एक दिन कहानी	पृ0 – 446
42)	उत्सव कहानी	पृ0 – 252
43)	एक वह कहानी	पृ0 – 332
44)	–"–	पृ0 – 332
45)	दिनचर्या कहानी	पृ0 – 339
46)	पशुओं के बीच कहानी	पृ0 – 143
47)	मिस फिट कहानी	पृ0 – 260
48)	–"– –"–	पृ0 – 256
49)	अपने लोग उपन्यास	पृ0 – 74
50)	आकाश की छत उपन्यास	पृ0 – 105
51)	अकेला मकान कहानी	पृ0 – 490
52)	एक रात कहानी	पृ0 – 60
53)	अपने लोग उपन्यास	पृ0 – 304
54)	जल टुटता हुआ उपन्यास	पृ0 – 453
55)	पानी के प्राचीर उपन्यास	पृ0 – 167
56)	अपने लोग उपन्यास	पृ0 – 119
57)	जल टुटता हुआ उपन्यास	पृ0 – 245
58)	आकाश की छत उपन्यास	पृ0 – 84
59)	लाल बत्ती के पास कहानी	पृ0 – 216
60)	कहाँ जाओगे कहानी	पृ0 – 371
61)	टुटे हुए रास्ते कहानी	पृ0 – 420
62)	खाली घर कहानी	पृ0 – 81

63)	बेला मर गयी कहानी	पृ0 - 68
64)	चिट्ठि के बीच कहानी	पृ0 - 201
65)	पानी के प्राचीर उपन्यास	पृ0 - 160
66)	जल टूटता हुआ उपन्यास	पृ0 - 106
67)	मुक्ति कहानी	पृ0 - 210
68)	खंड्हर की आवाज कहानी	पृ0 - 234
69)	घर कहानी	पृ0 - 284
70)	कर्ज कहानी	पृ0 - 345
71)	जल टूटता हुआ उपन्यास	पृ0 - 324
72)	-"- -"-	पृ0 - 106
73)	पानी कहानी	पृ0 - 496
74)	पानी के प्राचीर उपन्यास	पृ0 - 205
75)	आकाश की छत उपन्यास	पृ0 - 43
76)	हद से हद तक कहानी	पृ0 - 505
77)	जल टूटता हुआ उपन्यास	पृ0 - 546
78)	इकसठ कहानियां की भूमिका में	पृ0 - 15
79)	सूखता हुआ तालाब उपन्यास	पृ0 - 30
80)	रात का सफर उपन्यास	पृ0ए-32
81)	सूखता हुआ तालाब उपन्यास	पृ0 - 109
82)	अपने लोग उपन्यास	पृ0 - 488
83)	आकाश की छत उपन्यास	पृ0 - 17
84)	जल टूटता हुआ उपन्यास	पृ0 - 33
85)	-"- -"-	पृ0 - 299
86)	-"- -"-	पृ0 - 299
87)	अपने लोग उपन्यास	पृ0 - 186
88)	-"- -"-	पृ0 - 226
89)	पानी के प्राचीर उपन्यास	पृ0 - 182
90)	-"- -"-	पृ0 - 52

91) आकाश की छत उपन्यास पृ0 - 92

92) -"- -"- पृ0 - 91

93) दूसरा घर उपन्यास पृ0 - 21

94) रात का सफर उपन्यास पृ0 - 47

95) -"- -"- पृ0 - 47

96) -"- -"- पृ0 - 71

97) ठहरा हुआ समय कहानी पृ0 - 224

98) सूखा हुआ तालाब उपन्यास पृ0 - 55

99) भगवत कथा कहानी पृ0 - 49

100) कर्फ्यू कहानी पृ0 - 85

101) कर्फ्यू कहानी पृ0 - 85

102) बेला मर गयी कहानी पृ0 - 71

103) बदलियां कहानी पृ0 - 55

104) लाल हथेलियां कहानी पृ0 - 97

105) बेला मर गयी कहानी पृ0 - 70

106) लाल हथेलियां कहानी पृ0 - 100

107) माँ, बिखरा हुआ दिन कहानी पृ0 - 120

108) मनोज जी कहानी पृ0 - 38

109) अपने लोग उपन्यास पृ0 - 52

110) खंडहर की आवाज कहानी पृ0 - 342

111) बिना दरवाजे का मकान उपन्यास पृ0 - 75

112) घर लौटने के बाद कहानी पृ0 - 89

113) ठहरा हुआ समय कहानी पृ0 - 223

114) मिल फिर कहानी पृ0 - 259

115) खंडहर की आवाज कहानी पृ0 - 235

116) अपने लिये कहानी संग्रह पृ0 - 46

117) -"- -"- पृ0 - 42

118)	आकाश की छत उपन्यास	पृ0 - 32
119)	-"- -"-	पृ0 - 98
120)	मगल यात्रा कहानी	पृ0 - 109
121)	पानी के प्राचीर उपन्यास	पृ0 - 63
122)	-"- -"-	पृ0 - 80
123)	जल टुटता हुआ उपन्यास	पृ0 - 479
124)	-"- -"-	पृ0 - 480
125)	आकाश की छत	पृ0 - 61
126)	अपने लिये कहानी - संग्रह	पृ0 - 34
127)	पानी के प्राचीर उपन्यास	पृ0 - 11
128)	जल टुटता हुआ उपन्यास	पृ0 - 474
128)	-"- -"-	पृ0 - 474
130)	-"- -"-	पृ0 - 549
131)	अपने लोग उपन्यास	पृ0 - 71
132)	-"- -"-	पृ0 - 153
133)	कहानी दर्शन	पृ0 - 149
134)	अतीत का विष कहानी	पृ0 - 469
135)	अपने लोग उपन्यास	पृ0 - 131
136)	जल टुटता हुआ उपन्यास	पृ0 - 553
137)	-"- -"-	पृ0 - 287
138)	-"- -"-	पृ0 - 127
139)	पानी के प्राचीर उपन्यास	पृ0 - 128
140)	-"- -"-	पृ0 - 131
141)	पराया शहर कहानी	पृ0 - 275
142)	रात का सफर उपन्यास	पृ0 - 15
143)	पिता कहानी	पृ0 - 137
144)	रात का सफर उपन्यास	पृ0 - 10
145)	जल टुटता हुआ उपन्यास	पृ0. - 435

146)	आधुनिक कहानी	पृ0 - 239
147)	रात का सफर उपन्यास	पृ0 - 28
148)	-"- -"-	पृ0 - 28
149)	अपने लोग उपन्यास	पृ0 - 247
150)	जल टूटता हुआ उपन्यास	पृ0 - 286
151)	रात का सफर उपन्यास	पृ0 - 10
152)	-"- -"-	पृ0 - 28
153)	अपने लोग उपन्यास	पृ0 - 200
154)	मुर्दा मैदान कहानी	पृ0. - 346
155)	पानी के प्राचीर उपन्यास	पृ0 - 207
156)	दूसरा घर उपन्यास	पृ0 - 80
157)	मुर्दा मैदान कहानी	पृ0 - 346
158)	आकाश की छत उपन्यास	पृ0 - 107
159)	-"- -"-	पृ0 - 45
160)	-"- -"-	पृ0 - 50
161)	-"- -"-	पृ0 - 85
162)	रात का सफर उपन्यास	पृ0 - 34

.....